बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक



मूल्य 2.50

अक्टूबर 85

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका। भाग 1. अंक 4. अक्टूबर 1985

इस अंक में

चंदे की दरें
6 महीने : 15 रुपए
1 साल : 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजिए। ड्राफ्ट एकलव्य के नाम पर बनवाइए।

पत्र/चंदा भेजने का पता
एकलव्य,
ई 1-208 अरेरा कालोनी,
भोपाल, 462 016 (म. प्र.

संपादक : रेक्स,
संपादन : राजेश उत्साही, निशा व्यास
कला : जया विवेक
उत्पादन/वितरण : हिमांशु बिस्वास, हरगोविंद राय, कमल सिंह
समन्वय : विनोद रायना
इस अंक में सहयोग : उदय ताम्हणे, हृदयकांत, अरविंद गुप्ते





चकमक समाचार

इसी वर्ष जुलाई में चकमक स्कूलों के लिए जारी की गई। चित्र में टुल टुल विश्वास (कक्षा दसवीं, भोपाल) शालेय शिक्षा मंत्री, बंसीलाल धृतलहरे को 'चकमक' का अंक डार्कटिकट लगाने के लिए दे रही हैं। आदिमजाति एवं हरिजन कल्याण मंत्री श्रीमती कमला देवी 'चकमक' पढ़ रही हैं।

'चकमक' पत्रिका शिक्षा विभाग तथा आदिम जाति एवं हरिजन कल्याण विभाग द्वारा मध्यप्रदेश की सभी माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शालाओं में हर महीने भेजी जा रही है।

संबल रचना केंद्र, भोपाल ने एक 15 दिवसीय चित्रकला शिविर लगाया था। इस शिविर में बच्चों को चित्रकला सिखाने की जिम्मेदारी प्रसिद्ध चित्रकार, लक्ष्मीनारायण भावसार ने ली। 125 बच्चों ने इस शिविर में भाग लिया। बाद में उनके द्वारा बने चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

शहीद भगतसिंह पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र, पिपरिया ने स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) के अवसर पर पिपरिया और उसके आसपास के इलाकों में बच्चों की कई सारी प्रतियोगिताएं करवाई। कहानी, कविता और चित्र प्रतियोगिता के अलावा इस साल उन्होंने सामूहिक गान की प्रतियोगिता भी रखी। सैंकड़ों बच्चों ने भाग लिया। उदाहरण के लिए, कहानी प्रतियोगिता में 400 से अधिक प्रतियोगी थे और चित्र कला में 100 से अधिक। अगले अंकों में हम उनकी कुछ पुरस्कृत कहानियां व चित्र छापेंगे।

यह कोई अनाज रखने का भंडार नहीं है। यह तो उड़ीसा में बने एक कुएं का चित्र है। इस छाया चित्र को करीब 40 वर्ष पहले आर. नरोना ने खींचा था। उनका कहना था कि ऐसे कुएं उड़ीसा के तकरीबन हर घर में होते हैं। कुएं को पकी मिट्टी के रिंगों से बनाया जाता था। इन रिंगों का व्यास चार फुट होता था। कुएं की गहराई 20-25 फुट होती थी।

आजकल, ऐसे कुएं भारत में कई जगह दिखाई देते हैं। होशंगाबाद जिले में एक स्वयं सेवी संस्था-मित्र मंडल केंद्र, रसूलिया-ने कई साल पहले ऐसे तीन और चार फुट व्यास वाले रिंगों का निर्माण शुरू किया। यह काम आजकल एक दूसरी स्वयं सेवी संस्था-किशोर भारती, बनखेड़ी-करती है। परंतु एक अंतर है। ये रिंग लोहे के सरिए, सीमेंट और कांक्रीट से बनी होती हैं, पकी मिट्टी से नहीं। इस से ये कुएं और मजबूत होते हैं।

तुम्हारे इलाके में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के कुएं होंगे। कुछ पीने के पानी के लिए बनाए होंगे और कुछ सिंचाई के लिए। तुम इनका विवरण हमें लिख भेजो। और कुछ इनके इतिहास और निर्माण के बारे में भी पता करो। यह भी समझाने की कोशिश करो कि पीने के पानी के कुएं, रिंग के कुएं और नल कूप (ट्यूब वेल) में क्या अंतर है।





पाठक लिखते हैं



चित्र : शाहीन

चकमक चमक जाएगी

मैं कक्षा 10 का छात्र हूं। आपके द्वारा भेजा हुआ प्रथम अंक विद्यालय में पढ़ा। बच्चों की दृष्टि से 'चकमक' अत्यंत रोचक लगी। बच्चों के लिए आपका प्रयास वास्तव में सराहनीय सिद्ध हुआ।

'चकमक चमक जाएगी' आपना प्रयास प्रकाशनार्थ भेज रहा हूं। साथ ही मेरी हार्दिक इच्छा है यथा नाम तथा गुण 'चकमक' भविष्य में प्रगति करे , बच्चों में ज्ञानोपार्जन करने में सक्षम हो।

नन्हे-मुन्नों में 'चकमक' नई प्रगति लाएगी,
देश के कोने-कोने में जाकर 'चकमक' प्रेम का पाठ सिखाएगी

बच्चे-बच्चे के दिल में चकमक समा जाएगी
चकमक चमक जाएगी।।

ऊंच-नीच का भाव मिटाकर
'चकमक' हिलमिल रहना सिखलाएगी
हर बच्चे के दिल में 'चकमक'
बंधुत्व भाव जगाएगी, ज्ञान बढ़ाएगी
चकमक चमक जाएगी।।

शिवेंद्र कुदेशिया,
रामपुर कलां (मुरैना)

हमने ''अदर साइड'' पत्रिका में 'चकमक' के बारे में पढ़ा चकमक के उदेश्य रुचिपूर्वक और सराहनीय हैं।

संपादक, रकनो पत्रिका, मैंगलूर

हमारे बैंगलूर में अंग्रजी माध्यम का स्कूल है। हमें लगता है कि हमारे छात्रों को हिंदी साहित्य की सख्त आवश्यकता है। हमने सुना है कि 'चकमक' एक ऐसी पत्रिका है जो इन जरूरतों को पूरी करती है। क्या हम इसे बैंगलूर में प्राप्त कर सकते हैं?

शालिनी आचार्य, बैंगलूर

मैंने 'ईव्ज़ वीकली' पत्रिका में 'चकमक' की समीक्षा पढ़ी। मैं इस पत्रिका को नियमित रूप से प्राप्त करना चाहूंगी।

—नीना ठक्कर, ढेडरा-दुवई

पत्रिका निसंदेह विज्ञान की व्यवहारिकता में एक आंदोलन है।...पर पत्रिका कुछ स्थानों पर बच्चों को ना समझ व अपरिपक्व मानती है और कुछ स्थानों पर एकदम बौद्धिक हो जाती है।...पत्रिका लगभग टीचरी करती रहती है तो कहीं मित्र समझती है।

—जितेन 'कोही', दिल्ली

अच्छी है पर बच्चों के लायक नहीं, बड़ों के लिए ही लगती है।

—सत्यवती, दिल्ली

पत्रिका अच्छी लगी। पर चित्रों की कमी महसूस होती है।

अजय बोंकिल, इंदौर

पत्रिका से, जहां बच्चों के स्वस्थ्य मनोरंजन में सहायता मिलेगी, वहीं उनमें जिज्ञासु प्रवृत्ति को विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

राजेंद्र दुबे,
घाटली (होशंगाबाद

मैंने 'नई दुनिया' में 'चकमक' की समीक्षा पढ़ी। आपके पास विज्ञान के उपकरण बनाने (प्रयोग करने) की कोई पुस्तक हो तो उसका नाम क्या है? और बच्चों के लिए टैक्नीकल पुस्तकों का भी विवरण भेजें। माचिस से सूक्ष्मदर्शी बनाने वाले लेखक (वैज्ञानिक) का पता भी भेजें।

नामदेव उपाध्याय,
अलीराजपुर (झाबुआ)

('चकमक' के हर अंक में हम कई सारे प्रयोग देते हैं। ये सस्ते प्रयोग आप घर में भी कर सकते हैं। माचिस का सूक्ष्मदर्शी बनाने वाले लेखक एक माध्यमिक शाला में शिक्षक हैं। उनका पता है: उमेश चंद्र चौहान, राधास्वामी उच्चतर माध्यमिक शाला, टिमरनी, जिला होशंगाबाद। —सं.)

चकमक का पहला अंक पढ़ा। मजेदार भी लगा और बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी जानकारी से भरपूर। एक बात बहुत भायी कि पढ़ने वाले बच्चों को जगह-जगह चकमक में शामिल करने की कोशिश है।

रमेशदत्त शर्मा, नई दिल्ली

प्रयास अच्छा है। एक बात जो मुझे सबसे अच्छी लगी कि जो सहज है, स्वाभाविक है, बच्चों का जाना-पहचाना है उसी से उनका मनोरंजन हो और उनका ज्ञान भी बढ़े। एक सलाह है—बच्चों की कविताओं में यदि लय और तुक हो तो बच्चों को वे ज्यादा अच्छी लगती हैं।

सुधा चौहान, इलाहाबाद

आपकी 'चकमक' को पंढ़ा। बहुत खुश हुआ। इस पत्रिका के लिए बहुत आभारी हूं।

मनोज कुमार भगिया
गोंडलवाही (राजनांदगांव)

आप मुझे यह बतावें कि 'चकमक' उज्जैन में किस स्थान पर मिलेगी? यदि वह यहां नहीं मिलती हो तो डाक द्वारा भेजने का कष्ट करें।

उमेश कुमार सोनी, उज्जैन

(हम हर शहर व कस्बे में एजेंटों की नियुक्ति करना चाहते हैं। ताकि 'चकमक' बुक स्टाल पर प्राप्त हो सके। यदि आप डाक द्वारा प्राप्त करना चाहतें हैं तो चंदा वे सकतें हैं। चंदे की दरें पृष्ट 1 पर दी गई हैं। —सं.)

क्या हम 'चकमक' में अपने द्वारा बनाए गए कविता, कहानी, पत्र छपवा सकते हैं? सवालीराम क्लब का सदस्य हम किस प्रकार बन सकते हैं? क्या इसमें हमें हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर मिल सकेंगे? आप कृपा करके हर अंक में एक न एक प्रयोग (विज्ञान) अवश्य देवें। और एक धारावाहिक चित्र कथा भी छापें क्योंकि हम बच्चे अधिकतर चित्र कथा ही अधिक पढ़ते हैं।

मनीष उपाध्याय,
अलीराजपुर (झाबुआ)

(आप जरूर अपनी रचनाओं को छपने के लिए भेज सकते हैं। और सवालीराम के मन चाहे प्रश्न पूछ सकते हैं—चाहे वे विज्ञान के हों या न हों। सवालाराम क्लब के कई रूप हैं। एक रूप की झलक इस अंक में भी आप देख सकते हैं। सदस्यता के बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे। —सं.)



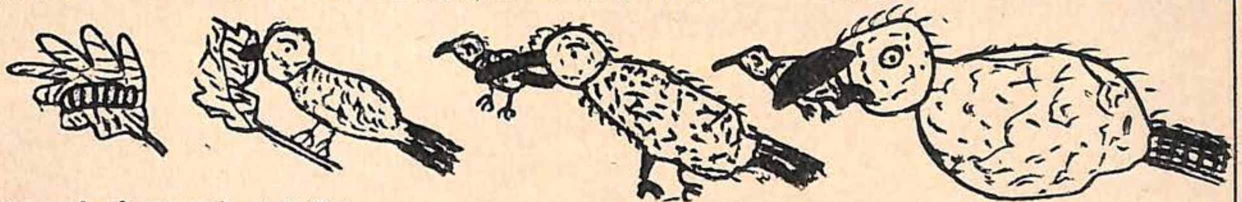
जुलाई अंक में प्रकाशित सामग्री पर पत्र.... .

भोजन कड़ी

फिर सांप को बाज खा जाता है।
↑
फिर मेंढक को सांप....
↑
फिर टिड्डा को मेंढक....
↑
घास को टिड्डा खाता है।



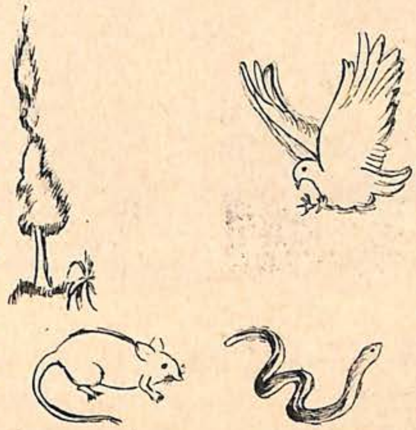
पत्ती को इल्ली खाती है। इल्ली को गोरैया (चिड़िया).... गोरैया को कौआ.... कौए को बाज खा जाता है।



राकेश कुमार तिवारी, कक्षा दसवीं, नईगढ़ी (रींवा)

साथ दिखाए चित्र में चार चीजें दिखाई गई हैं। एक वृक्ष, एक चूहा, एक सर्प और एक गिद्ध। भोजन संबंधी आवश्यकताओं के आधार पर विभिन्न जातियों के बीच के संबंध को आहार श्रृंखला या भोजन कड़ी कहते हैं। इसी तरह घास, टिड्डा, लिजार्ड और गिद्ध के बीच भी भोजन कड़ी है।

प्रहलाद प्रसाद स्वर्णकार,
लोहारा (राजनांदगांव)



मुक्ति

एक जादूगर था। उसका नाम डच कलाकार एशर था। उसने अपने जादू के प्रभाव से बहुत से पक्षी पकड़े और जादू के प्रभाव से उन्हें दरी के अंदर बंद कर दिया। अंत में, जब उसने सब पक्षियों को आजाद कर दिया, उसके मन में एक विचार आया। उसने एक चित्र बनाया और उसका नाम मुक्ति रखा।

शंकर सिंह,
कक्षा ग्यारहवीं, लटेरी

'चकमक' पत्रिका...

आपकी 'चकमक' पत्रिका मुझे पढ़ने को एक साथी द्वारा प्राप्त हुई। पढ़कर बहुत प्रसन्न ;आ। इसमें हर जानकारी प्राप्त हुई। बहुत ज्ञानवर्धक सामग्री एकत्रित है। मैं इसकी एक प्रति मंगाने को इच्छुक हूं। परंतु मैं एक गरीब छात्र हूं तथा गरीबी हालत में (विद्याधन) पढ़ रहा हूं। मैं 30 रुपए वार्षिक देने लायक नहीं हूं। इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूं कि मुझे कुछ छूट देकर पत्रिका भेज सकते हैं। मैं एक प्रति का एक रुपया दे सकता हूं। अगर ऐसा हो सकता तो कृपा कर मुझे सूचित करने की कृपा करें।

कृपाराम नापित,
औटापुरवा (छतरपुर)

'चकमक' पत्रिका को पढ़ा तो मन प्रसन्न हो उठा।

मुखराज किशोर यादव,
तमेर पारा (दुर्ग)

'चकमक' के लिए बधाई! पत्रिका बहुत सुंदर और सार्थक है।

रमेश उपाध्याय, दिल्ली

मैंने 'चकमक' पत्रिका को आदिम जाति कन्या माध्यमिक शाला, डेहरी में देखा। पत्रिका मुझे भी पसंद आई। अगर चकमक शालाओं के लिए निःशुल्क हो तो निम्न पते पर भी भेजने की कृपा करेंगे:

प्रधानाध्यापक
प्राथमिक शाला, बरखेडा
डेहरी (बाग), धार

प्रकाश चंद्र गुप्ता,
बरखेड़ा (धार)

('चकमक' पत्रिका शिक्षा विभाग और आदिम जाति एवं हरिजन कल्याण विभाग द्वारा प्रदेश की सारी माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शालाओं में भेजी जाती है। प्राथमिक शालाओं को अलग से चंदा देना होगा।

या शिक्षा विभाग से संपर्क कर सकते हैं। प्राइवेट स्कूल भी इस पत्रिका को चंदा भेज कर प्राप्त कर सकते हैं। -सं.)

मैं अपने बच्चों के लिए 'चकमक' पत्रिका पूरे साल के लिए मांगना चाहता हूं।

माधव प्रसाद गुप्ता,
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

दिल्ली के जितेन कोही के साथ 'चकमक' पर पाठकों की बातचीत के कुछ अंश–

"इसका दूसरा अंक कब आएगा। देखो मैंने सूक्ष्मदर्शी बनाई।"

सम्मीसिंह, 16 वर्ष

"अंकल, आपके पास ऐसी और किताब है तो मुझे दो। बस दो ही कहानी हैं इसमें तो... ये आलू मटर आपने पढ़ा?"

बंटी, 9 वर्ष

"आपके पास चंपक नहीं है या नानाजी और जादुई छड़ी।"

"क्यों अच्छी नहीं लगी?"

"ठीक है। पर मुझे पता ही नहीं चला कुछ ठीक से।"

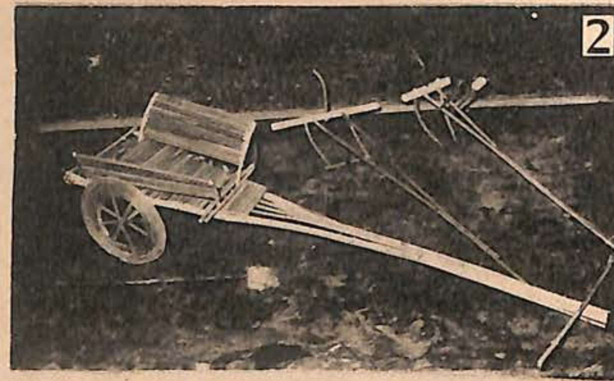
नवीन, 13 वर्ष

"कहानी एक भी नहीं है इसमें, मेरी स्कूल वाली किताब जैसी है बस उससे कुछ अच्छी। हां खेल खूब हैं। मैंने 14 सब्जियों के नाम ढूंढे।"

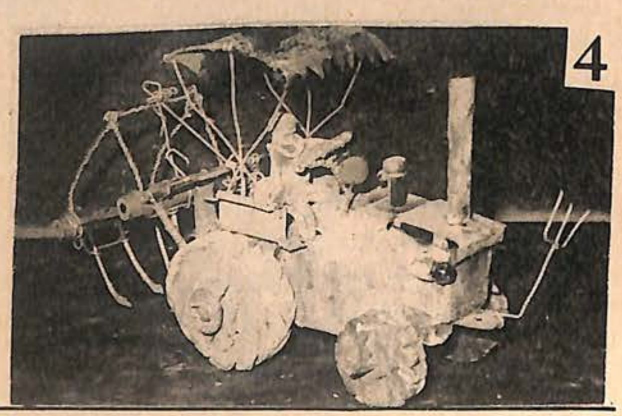
संदीप कौर, 9 वर्ष

भोले बुझक्कड़ कहते हैं









1. बखर और हल (ठटेरा) – संजय सिंह ठाकुर (पवारखेड़ा)
   बखर (लकड़ी) – नंद किशोर पटेल (कुलामड़ी)
2. बैलगाड़ी (सोंटाचारा) – रामकुमार उपाध्याय (पवारखेड़ा)
3. मोर (सोंटाचारा) – अभिनंदन तिवारी (आगरा कलां)
4. ट्रेक्टर (मिट्टी) – रमेश चौरे (पवारखेड़ा)
5. महिला (सुतली) – अनीता शर्मा (पवारखेड़ा)
6. हिंडोला – अभिनंदन तिवारी (आगरा कलां)

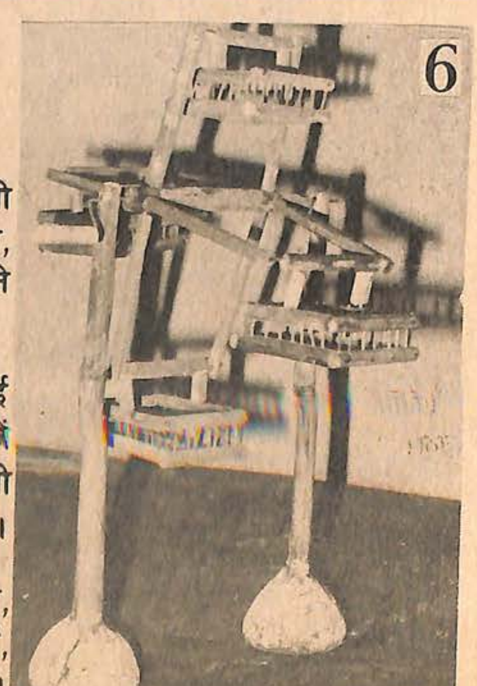


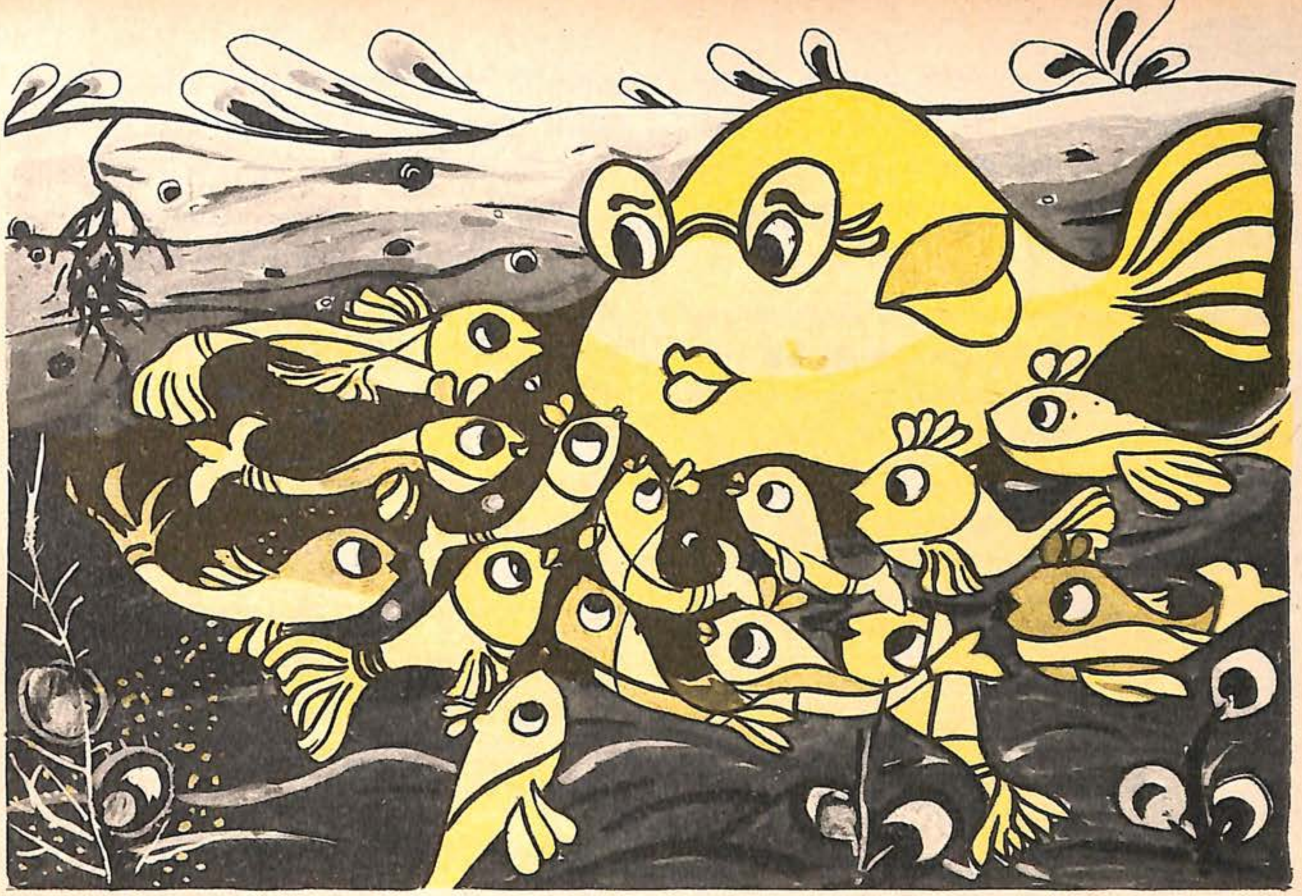
"हमको नहीं आता!"
"बहुत मुश्किल है!"
"हमसे नहीं बनता!"

जब भी चित्र बनाने, कविता या कहानी लिखने या माडल बनाने की बात आती है, तो अक्सर ऐसे ही जवाब तुम लोगों से सुनने को मिलते हैं।

पर यहां तुम्हारे साथियों द्वारा बनाई गई चीजों के चित्र प्रकाशित हैं। ये सब चीजें हमारे आसपास की वस्तुओं से बनी हैं-मिट्टी, सुतली, घास, सरकंडा आदि से।

हमें पता है तुम भी ऐसी चीजें बना सकते हो, यदि थोड़ी कोशिश करो। खेल-खेल में, स्कूल के मेले में या फिर विज्ञान प्रदर्शनी में।





एक नन्ही काली मछली

समद बहरंगी

एक ठंडी रात को समुद्रतल पर एक बूढ़ी मछली ने अपने बारह हजार बच्चों को इस प्रकार एक कहानी सुनानी प्रारंभ की।

एक समय की बात है, एक काली मछली अपनी मां के साथ एक छोटे से झरने में रहती थी। यह झरना एक विशाल पर्वत से निकलकर नीचे एक गहरी खाई में गिरता था।

प्रतिदिन, यह छोटी मछली अपनी मां के साथ इस झरने की सीमा में खेलकूद करती रहती थी। कई बार वह अपनी मां से बिछड़ भी जाती थी। लेकिन, अंत में हमेशा वे एक दूसरे से पुनः मिल जातीं।

एक दिन, छोटी मछली गहरे विचारों में मग्न थी। आज उसे खेलने की भी इच्छा नहीं थी। उसकी मां ने सोचा कि शायद उसकी बच्ची आज बीमार है और कुछ समय में ठीक हो जाएगी। वह यह सोचने में असमर्थ थी कि उसकी बच्ची की बीमारी का एक विशेष कारण है।

दूसरे दिन, छोटी मछली ने अपनी मां से कुछ बातें करने की इच्छा प्रकट की। लेकिन मां ने किसी और समय बात करने को कहकर घूमने-फिरने के लिए कहा। "नहीं मां, मैं घूमने से ऊब गई हूं। इसलिए, मैं यह जगह छोड़ना चाहती हूं।"

उसकी मां, जो अभी नींद में ही थी, बोली, "इस समय तुम कहां जाना चाहती हो?"

छोटी मछली ने जवाब दिया, "मैं यह देखने जाना चाहती हूं कि यह झरना कहां खत्म होता है। तुम्हें तो मालूम है कि मैं इसके बारे में महीनों से सोच रही हूं। परंतु अभी तक कुछ भी नहीं समझ पाई हूं। रात भर सोचने के बाद मैंने तय कर लिया है कि मुझे खुद यह देखने जाना पड़ेगा कि यह झरना कहां समाप्त होता है। इसके साथ-साथ मैं यह भी जान जाऊंगी कि दूसरी जगहों पर क्या-क्या होता है।"

मां ने बच्ची की ओर देखा और हंसते हुए कहा, "जब मैं छोटी थी तो तुम्हारे जैसे ही सोचा करती थी। लेकिन झरने का प्रारंभ और अंत नहीं होता। यह हमेशा बहता ही जाता है और कभी समाप्त नहीं होता।"

"लेकिन मां, क्या तुम यह नहीं सोचतीं कि हरेक चीज

समद बहरंगी इरान का एक क्रांतिकारी लेखक था।
चित्र : आशा शर्मा, भोपाल



समाप्त होती है। रात, दिन, सप्ताह, महीने, साल, सभी तो......।''

बीच में ही मां ने डांटा, ''यह सब बेकार की बातें बंद करो। यह समय तो घूमने-फिरने का है। ऐसी बेतुकी बातें करने का नहीं।''

''नहीं मां,'' वह छोटी मछली बोली, ''मैं इस झरने में घूमने से ऊब गई हूं। मैं कहीं और जाना चाहती हूं। तुम्हें शायद ऐसा लग रहा है कि मुझे ये सब बातें किसी ने सिखाई हैं। परंतु ये सब बातें मेरे सोच-विचार का परिणाम हैं। मैंने यहां पर भी कुछ चीजें सीखी हैं। जैसे, अधिकतर मछलियां अपने बुढ़ापे में कहतीं हैं कि उनका जीवन बेकार गया। वे हरेक चीज को कोसती हैं। तुम ही मुझे बताओ कि जीवन का अर्थ केवल एक छोटी सी जगह में इधर-उधर घूमना ही है?''

मां विचलित हुई और बोली, ''बेटी, क्या तुम्हें बुखार आया है जो तुम ऐसी बातें कर रही हो? संसार..... संसार.......संसार वहां है जहां हम रहते हैं। जीवन वह है जो हमारे इर्द-गिर्द है।''

बाहर से एक मछली उनकी आवाजों को सुनकर जोर से बोली, ''बहन, तुम अपनी बच्ची के साथ सवेरे-सवेरे क्या बहस कर रही हो? ऐसा लग रहा है कि आज तुम घूमना नहीं चाहतीं।''

मां घर से बाहर आई और पड़ोसिन से पूछने लगी, ''इस युग में यह क्या हो रहा है? अब तो छोटे बच्चे ही अपने माता-पिता को बातें सिखाने लगे हैं।''

''वह कैसे?'' पड़ोसिन ने पूछा।

छोटी मछली की मां बोली, ''अब इसी मूर्ख को देखो। इसकी बातें तो जरा सुनो। ये इस संसार में क्या हो रहा है यह देखने जाना चाहती है।''

पड़ोसन ने छोटी मछली से पूछा, ''तुम कब से संत और विचारक बन गईं और हमें इसकी खबर तक नहीं!''

छोटी मछली बोली, ''मौसी, मुझे संत और विचारक का अर्थ तो मालूम नहीं, परंतु यह मालूम है कि मैं रोज के घूमने से उकता गई हूं। मैं केवल ऐसा जीवन जीना नहीं चाहती जिसमें मैं कुछ भी नया सीख न सकूं।''

पड़ोसन ने उसकी मां की ओर देखा और कहा, ''यह कैसी बातें हैं?''

मां ने उदास होकर जवाब दिया, ''मैं कभी सोच भी नहीं सकती कि मेरी इकलौती संतान ऐसी निकलेगी। पता नहीं किस राक्षस ने मेरी बच्ची का दिमाग खराब किया है।''

''मेरा दिमाग किसी ने खराब नहीं किया है मां।'' छोटी मछली बोली, ''लेकिन मेरे पास देखने के लिए आंखें और सोचने तथा समझने के लिए दिमाग है।''

तभी उस पड़ोसन ने कहा, ''बहन जी क्या तुम्हें वह घोंघा याद है?''

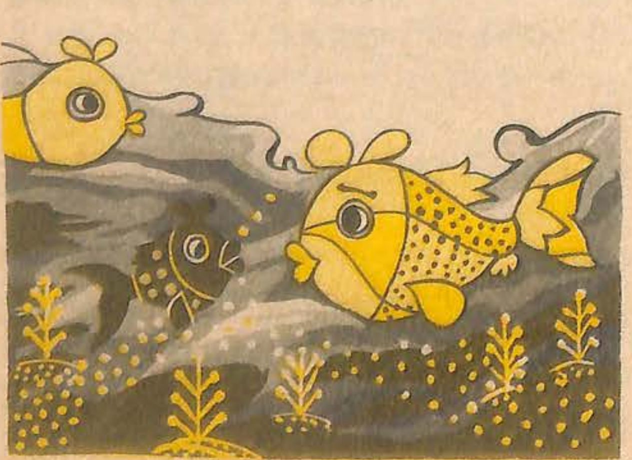
''हां अच्छी तरह याद है,'' मां बोली, ''वो हमेशा मेरी प्यारी बच्ची के पीछे लगा रहता था। उसका पूर्ण सत्यानाश होना चाहिए।''

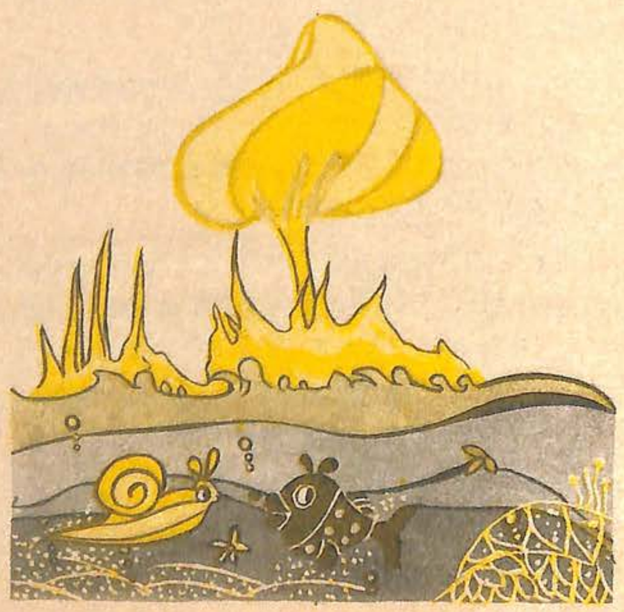
''मां ऐसा मत कहो, वह मेरा प्रिय मित्र था।''

इस पर पड़ोसन मछली बोली, ''मैंने अपने जीवन में अभी तक घोंघा और मछली की दोस्ती के बारे में नहीं सुना।''

''और मैंने भी अपने जीवन में कभी भी यह नहीं सुना कि घोंघा और मछलियां दुश्मन होते हैं। लेकिन आप लोगों ने दुष्टता से उसे अपने गांव से भगा दिया।'' छोटी मछली झल्लाई।

इस बहस की आवाज सुनकर गांव की सभी मछलियां वहां इकट्ठी हो गईं। छोटी मछली के शब्दों से सभी बहुत नाराज हुए, क्योंकि पहले किसी ने भी गांव छोड़ने की बात नहीं कही थी।





एक बूढ़ी मछली ने उससे पूछा, "क्या तुम यह सोचती हो कि हम तुम पर दया दिखाएंगे?"

दूसरी बोली, "इसके तो कान खींचने चाहिए।"

छोटी मछली की मां ने सभी को दूर हटने को कहा। उसकी पड़ोसन गंभीरता से बोली, "मुझे तुम्हारे पड़ोस में रहते हुए शर्म आती है।"

किसी ने सुझाव दिया, "इससे पहले कि यह चीज हाथ से बाहर जाए, हमें इसे न्यायाधीश के पास ले जाना चाहिए।"

बड़ी मछलियों ने छोटी-काली मछली को पकड़ लिया और न्यायाधीश के पास ले जाने लगीं। काली मछली की मां दुःख से छटपटाकर रोने लगी, "हे भगवान, मैं क्या कर सकती हूं? मैं अपनी छोटी बच्ची को खो रही हूं।"

छोटी मछली ने मां से कहा, "मां मेरे लिए आंसू मत बहाओ। इन बूढ़ी और थकी-हारी मछलियों के लिए रो।"

"मूर्ख हमारा अपमान करती है," कोई चिल्लाया। "कुछ ही दिनों में," दूसरी बोली, "तुम मछुआरों के जाल में फंस जाओगी और उनके भोजन में काम आओगी।"

सभी गांव की मछलियों जैसे, इस गांव की मछलियां भी मछुआरों से घबराती थीं। जब भी कोई किसी भी काम को दूसरी तरह से करने को कहता था,तो यह कहा जाता था कि मछुआरों के जाल में फंसने से तो बेहतर है कि यह काम किया ही नहीं जाए।

बूढ़ी मछलियों ने उसे न्यायाधीश के पास ले जाने का इरादा छोड़ दिया। वे उसे डराती ही रहीं। एक बोली, "यदि तुम जाती हो और बाद में पछताती हो तो हम तुम्हें वापस नहीं आने देंगे।"

दूसरी समझाते हुए बोली, "यह सब तो जवानी की भूलें हैं इसलिए मत जाओ।"



एक बूढ़ी मछली बीच में ही पूछ बैठी, "यहां क्या तकलीफ है?

और एक चिल्लाई, "और कोई संसार नहीं है। संसार तो यही है, वापस आ जाओ।"

कोई उस मछली से मोल-भाव कर रहा था, "यदि तुम इन सभी बातों को भूलकर वापस आ जाओगी तो हम तुम्हें वास्तव में एक बहुत ही बुद्धिमान मछली मान लेंगे।"

लेकिन छोटी मछली जानती थी कि वह उन्हें और कुछ भी नहीं कह सकती थी। उसके छोटे मित्र उसे जलप्रपात तक छोड़ने आए।

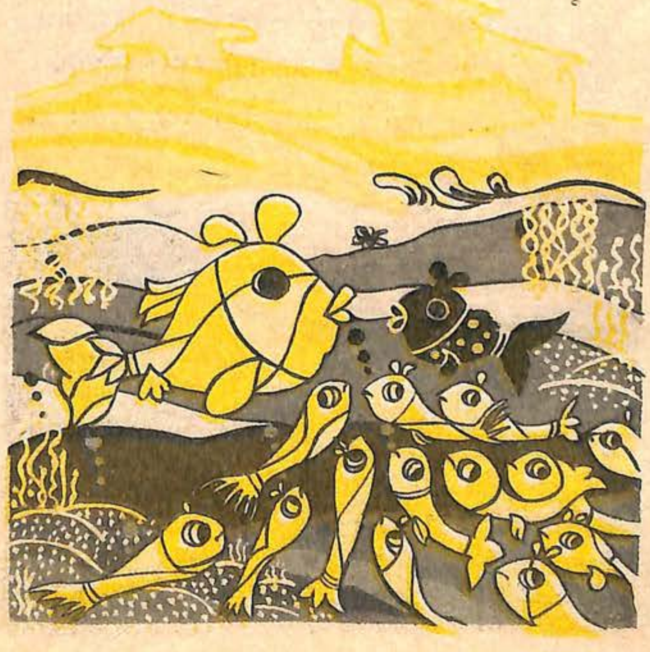
"मित्रों, मैं तुम सब से फिर से मिलने की उम्मीद करती हूं," और गिरते-गिरते उसने कहा, "मुझे भूलना नहीं।"

"हम कैसे भूल सकते हैं," उन्होंने एक साथ जवाब दिया, "तुम्हीं ने तो हमें इतनी गहरी और लंबी नींद से जगाया है। साहसी मित्र हम भी तुमसे फिर मिलने के लिए उत्सुक रहेंगे।"

छोटी मछली को प्रपात से नीचे एक छोटे से तालाब में गिरा दिया गया। पहले तो वह घबराई लेकिन कुछ ही क्षणों बाद वह सम्हल गई और तालाब में इधर-से-उधर तैरने लगी। उसने पहले कभी भी एक ही जगह इतना पानी नहीं देखा था। मेंढक के हजारों बच्चे उस तालाब में घूम रहे थे। जैसे ही उन्होंने छोटी-काली मछली को देखा, वे उसका मजाक उड़ाने लगे, "इसके आकार को देखो, इसका चेहरा कैसा अजीब है, किस तरह की प्राणी हो तुम?"

एक क्षण के लिए छोटी मछली उन्हें देखती रही और फिर बोली, "कृपया मेरा अपमान मत करो मैं एक छोटी-काली मछली हूं। तुम्हारे नाम क्या हैं? तुम अपने नाम बताओ जिससे हम दोस्ती कर सकें।"

एक मेंढक का बच्चा पास आकर बोला, "हम मेंढक के बच्चे हैं।"







दूसरा बोला, "सभ्यता और संस्कृति के रखवाले हैं।" तीसरे ने जोड़ा, "दुनिया में हमसे सुंदर प्राणी नहीं है।" चौथे ने कहा, "हम तुम्हारे जैसे कुरूप और बेढंगे नहीं हैं।"

छोटी मछली आश्चर्य और गुस्से से उनकी तरफ देखते हुए बोली, "तुम सब घमंडी हो। खैर मैं तुम्हें माफ करती हूं क्योंकि तुम नासमझ हो।"'

अब तो मेंढक के बच्चे और भी नाराज हो गए। वे एक साथ चिल्लाए, "नासमझ, अज्ञानी...कौन...हम!"

"और क्या," छोटी मछली आगे बोली, "यदि तुम अज्ञानी नहीं होते तो तुम्हें यह मालूम होता कि इस संसार में ऐसे और भी जीव हैं जो स्वयं को सुंदर मानते हैं।"

मेंढक के बच्चे अत्यंत नाराज हुए। वे जानते थे कि मछली की बातें सच हैं लेकिन वे जिरह हारना नहीं चाहते थे। उन्होंने दूसरे तरीके से पेश आने का निर्णय किया। एक बोला, "तुम तो बिना किसी कारण के नाराज हो रही हो। हम तो रोज इस संसार में इधर-से-उधर घूमते हैं। पर हमें अपने माता-पिता तथा हमारे सिवाय और कोई नहीं दिखता। बहुत ही छोटे कीड़े भी हैं जिन्हें गिना नहीं जा सकता है।"

"क्या इस संसार के अलावा भी कोई और संसार है?" मेंढक के कई बच्चों ने एक साथ पूछा।

छोटी मछली ने जवाब दिया, "खैर तुम लोग इतना तो खुद सोच सकते हो कि यहां इतना पानी कहां से आता है?" फिर उसे अचानक उसके घोंघे मित्र द्वारा बताई गई बात याद आई और बोली, "इस पानी के बाहर भी अनेक जगहें हैं।"

"क्या कहा?," हंसते हुए मेंढक के बच्चों ने पूछा, "तुम तो वाकई मूर्ख हो,क्योंकि ऐसी जगह हो ही नहीं सकती। तुम ही बताओ की ऐसी जगह कहां पर है जहां पानी नहीं?"

छोटी मछली समझ गई कि वह मूर्खों में आ पड़ी है और उसका चले जाना ही अच्छा है। वह जाने से पहले मेंढकों की मां से मिलना चाहती थी।

तभी वह मेंढक की भारी आवाज से घबरा गई। उसने देखा कि मेंढकों की मां उसके पास खड़ी है।

"नमस्ते दादी," नन्ही मछली ने नम्रता से कहा।

दादी मेंढक बोली, "तो तुमने आखिर मेरे छोटे बच्चों को अपने बड़बोले विचारों से प्रभावित कर ही लिया। तुम मुझे धोखा मत दो। मैंने अपने जीवन में यह जाना है कि पूरा संसार इस तालाब में है। तुम यहां से भाग जाओ और मेरे बच्चों को मत उकसाओ।"

छोटी मछली बोली, "यदि आप और सौ साल भी जीएं, तो भी आप कुछ नहीं सीख पाएंगी, यदि आपने दूसरों की बातें नहीं सुनने का निश्चय ही कर लिया है। आप कैसे......"

मेंढकों की मां ने छोटी काली मछली को बात पूरी करने नहीं दी और उसे पकड़ने के लिए छलांग लगा दी। छोटी मछली सतर्क थी और उसने पानी के नीचे और कीड़ों को हिलाया और तेजी से भाग गई।

घाटी गहरी होती गई और छोटा सा झरना अब गहरा और चौड़ा हो गया था। पानी भी अब काफी बढ़ गया था। एक जगह एक बहुत बड़ा पत्थर झरने को दो भागों में बांट रहा था। उस पत्थर पर एक बड़ी छिपकली धूप का आनंद ले रही थी। वहां से वह एक केंकड़े को देख रही थी जो झरने में बैठकर अभी शिकार किए हुए एक मेंढक को खा रहा था। जब छोटी-काली मछली इस जगह से जाने लगी तो उसका ध्यान अचानक इस केंकड़े की ओर गया, और वह डर गई। दूर से ही उसने केंकड़े को नमस्ते कहा। केंकड़े ने उसकी ओर लालच से देखा और बोला, "कितनी नम्र मछली है। आओ बच्ची, मेरे पास आओ।"

छोटी मछली बोली, "मैं पूरे संसार का चक्कर लगाना चाहती हूं तथा मैं आपका भोजन नहीं बनना चाहती हूं।"

इस पर वह केंकड़ा बोला, "ऐसा क्या है जो तुम्हारे जैसी बड़ी लड़की को डराता है?"





"मैं बिना किसी कारण के नहीं डरती," मछली बोली, "जो कुछ मेरी आंखें देखती हैं और दिमाग बतलाता है, वही मेरा मुंह बोलता है।"

"क्या तुम हमें यह बतला सकती हो कि तुम्हारी आंखों ने ऐसा क्या देखा और दिमाग ने क्या बताया कि हम तुम्हें खाने वाले हैं।"

छोटी मछली ने मरे हुए मेंढक की ओर देखकर कहा, "मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो।"

"अच्छा तुम इस मेंढक की बात कर रही हो," केंकड़ा हंसा, "तुम तो बचकानी बातें कर रही हो। मेरा और मेंढकों का तो झगड़ा है इसलिए मैं इन्हें मारता हूं ये अपने आप को संसार में एकमात्र प्राणी समझते हैं। ये बहुत ही घमंडी हैं। मैं तो उन्हें केवल यह दिखाना चाहता हूं कि दुनिया किसके हाथ में है। तुम्हें तो मुझसे डरने की कोई बात नहीं; आओ बच्ची, पास आओ।"

अपनी बात पूरी करने के बाद केंकड़ा अपने चार पैरों पर लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ने लगा। वह इतना भद्दा लगने लगा था कि छोटी मछली डरने के बजाय हंसने लगी। छिपकली भी हंसने लगी और जोर से बोली, "अरे केंकड़े, ठीक से चलना तो आता नहीं फिर भी तुम्हें ये कैसे मालूम कि दुनिया किसके हाथ में है?"

जैसे ही छोटी मछली पीछे हटने लगी, उसने देखा कि पानी पर एक बड़ी परछाई गिरी। अचानक एक लंबी और मोटी लकड़ी केंकड़े को लगी जिसके कारण वह रेत में धंस गया। वह इतना धंस गया था कि थोड़ा-सा भी हिल नहीं सकता था।

छिपकली इतनी हंस रही थी कि वह पानी में गिरते-गिरते बची। छोटी मछली को ऊपर एक छोटी बकरियां चराने वाली लड़की दिखाई दी। लड़की मछली को देख मुस्कराई, जिसके जवाब में मछली भी मुस्कराई। इतने में बकरियां और भेड़ों का एक झुंड पानी पीने के लिए आया। में-में तथा बां-बां की आवाजें आने लगीं। वह छोटी मछली इन प्राणियों को आश्चर्य से देखती रही। उसने अपने जीवन में कभी भी इतने सुंदर प्राणी नहीं देखे



थे। उनके जाने के बाद छोटी मछली ने छिपकली की ओर देखकर कहा, "प्यारी छिपकली, मैं तो एक छोटी-काली मछली हूं और इस झरने के अंत को ढूंढने निकली हूं। मैं यह सोचती हूं कि तुम एक बुद्धिमान प्राणी हो। इसलिए मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछना चाहूंगी।"

छिपकली बोली, "पूछो, जो कुछ तुम्हें पूछना है।"

छोटी मछली बोली, "एक बुद्धिमान और दयालू घोंघे ने मुझे एक बार बगले, तलवार मछली और सारस के बारे में बताया था। यदि तुम उनके बारे में कुछ जानती हो तो मुझे बताओ।"

"तलवार मछली और सागरी सारस इस इलाके में नहीं हैं," छिपकली बोली, "तलवार मछली तो केवल समुद्र में रहती है लेकिन सारस तो यहां से कुछ दूर ही पाया जा सकता है। कहीं धोखे से उसकी थैली में न फंस जाना।"

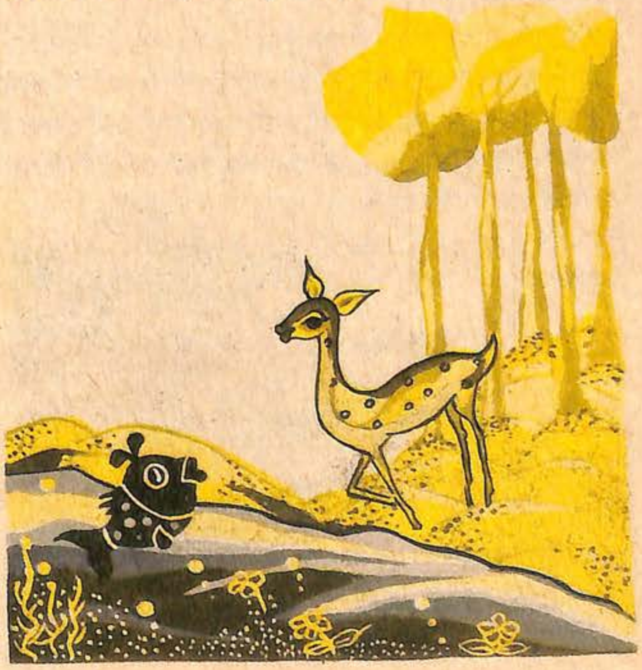
"कौन-सी थैली?" मछली ने पूछा।

छिपकली ने बताया, "सागरी सारस के गले में एक थैली होती है जिसमें वह पानी भरता है। वह मुंह खोलकर पानी में तैरता है और मछलियां उसके मुंह में चली जाती हैं जिन्हें वह खा लेता है।लेकिन यदि उसका पेट भरा हुआ हो तो वह मछलियों को कभी और खाने के लिए थैली में ही रखता है।"

छोटी मछली ने डरते हुए पूछा, "क्या उस थैली में घुसने के बाद बाहर निकलने के लिए कोई रास्ता नहीं है?"

"थैली को फाड़े बिना कोई रास्ता नहीं है।" यह कहते हुए वह छिपकली पत्थर की एक दरार में गई और तुरंत एक छोटा सा खंजर लेकर वापस आई। फिर वह छोटी मछली से बोली, "मैं तुम्हें यह खंजर दूंगी। इसे तुम





हमेशा अपने पास रखना। जिससे यदि कभी तुम सारस के मुंह में फंस जाओगी तो भी थैली फाड़कर भाग सकोगी।"

छोटी मछली ने अपने पर के पीछे खंजर रखा और बोली, "प्यारी छिपकली, तुम बहुत ही दयालु हो। मैं तुम्हें किस तरह धन्यवाद दूं यह समझ में नहीं आ रहा है।"

"धन्यवाद की कोई जरूरत नहीं," छिपकली बोली, "मेरे पास ऐसे बहुत से खंजर हैं। जब भी मुझे समय मिलता है मैं कांटों से खंजर बनाती हूं और तुम्हारे जैसी बुद्धिमान मछलियों को दे देती हूं।"

"क्या, यहां से और मछलियां गई हैं?" छोटी मछली ने आश्चर्य से पूछा।

"क्यों? बहुत मछलियां यहां से गई हैं," छिपकली ने जवाब दिया। "अब वे सब मछलियां झुंड में रहने लगी हैं और मछुआरों को काफी तंग कर रही हैं।"

छोटी मछली बोली, "क्या, तुम मुझे यह बता सकती हो कि किस तरह उन्होंने मछुआरों को तंग कर रखा है?"

"एकता से रहकर," छिपकली बोली। "जैसे ही मछुआरे पानी में जाल फेंकते हैं, ये मछलियां जाल में घुस जाती हैं और पूरा का पूरा जाल खींच कर समुद्र तल में डुबा देती हैं।"

इसके बाद छिपकली ने दरार के पास कान लगाकर सुनने के बाद कहा, "अब मैं चलती हूं। मेरे बच्चे उठ गए हैं।" और वह उस दरार में चली गई।

छोटी मछली स्वयं कई प्रश्नों को सोचते हुए आगे बढ़ने लगी। वह सोच रही थी कि यदि सारस उससे अधिक शक्तिशाली हुआ तो? तलवार मछली अपने ही बच्चों को कैसे खाती होगी? सागरी बगले हमारे शत्रु क्यों हैं?

अब उसे अपने सफर में बहुत आनंद आ रहा था और वह बहुत कुछ सीखती जा रही थी। उसे अब झरनों से गिरने में भी मजा आ रहा था। सूरज की धूप से उसे और स्फूर्ति प्राप्त हो रही थी। एक जगह उसने एक सुंदर हिरन को पानी पीते देखा। वह बोली, "अरे सुंदर प्राणी इतनी जल्दी क्या है?"

हिरन बोला, "शिकारी मेरा पीछा कर रहा है। देखो, उसने मुझे गोली मारी है।"

मछली जख्म तो देख नहीं पाई, लेकिन हिरन को लंगड़ाते हुए वापस जाते देख समझ गई थी उसके साथ कोई भयानक हादसा घटा है।

एक जगह उसने बड़े-बड़े कछुओं को धूप सेंकते हुए देखा तो दूसरी जगह उसने तीतरों की आवाज सुनी। दोपहर में वह ऐसी जगह पहुंची जहां वह घाटी बहुत ही चौड़ी हो गई और पानी तेजी से बहने लगा। पानी की इस नई गहराई ने छोटी को बहुत खुश कर दिया। उसने घर छोड़ने के बाद पहली बार अपनी जैसी मछलियां देखीं। कई छोटी-छोटी मछलियों ने उसे चारों ओर से घेर लिया और बोली, "तुम यहां पर अजनबी दिखती हो। क्या हम सही हैं?"

छोटी मछली बोली, "हां, मैं एक अजनबी हूं और बहुत दूर से आई हूं।"

एक छोटी-सी मछली ने पूछा, "अब तुम कहां जाओगी?"

"मैं इस झरने के आखरी सिरे तक जाना चाहती हूं," छोटी-काली मछली बोली।

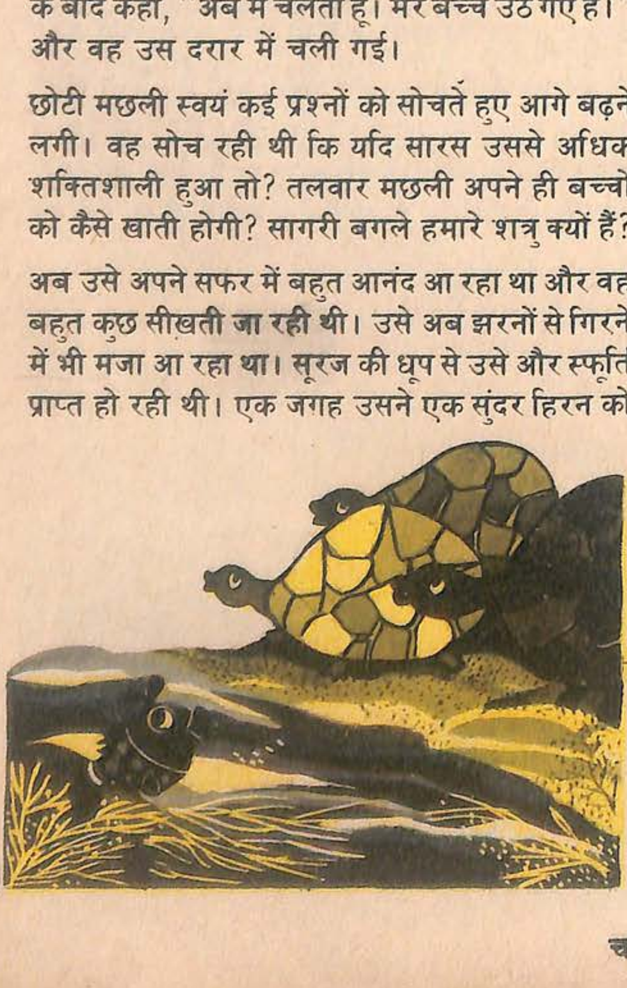
"कौन-सा झरना?" सब मछलियों ने पूछा।

छोटी मछली बोली, "यही जिसमें हम तैर रहे हैं।"

दूसरी मछली हंसते हुए बोली, "अच्छा, इसे तो सब नदी कहते हैं।"

छोटी मछली चुप रही।

एक मछली ने पूछा, "क्या तुम्हें मालूम हैं कि यहां पर सागरी सारस हैं?" (शेष पृष्ठ 17 पर)







चित्र : मनोज जलार, पिपरिया

मेरे प्रिय शिक्षक

मुझे जिन सर ने मक्खी मारना सिखाया उनको मैं नहीं भूल सकता। उन्होंने एक साल ही पढ़ाया था। बायलाजी पढ़ाते थे। वे हमें बहुत ही याद आते हैं। उनका तबादला हो गया। हमें बड़ा अफसोस हुआ। पर हमारे बस की बात कहां थी? हम सब मन मसोस कर रह गए।

एक तो वे कभी डांटते नहीं थे, और डांटते भी तो मुस्कराकर। हमें उनकी मार भी अच्छी लगती। हम तो चाहते थे कि वह हमें मारें। जिससे हमको लगे कि वह आशीर्वाद दे रहे हैं। पर ऐसा मौका कभी आया नहीं।

आठवीं पास करके बड़े स्कूल में आया तो महाराजवाड़ा स्कूल मुझे राजमहल जैसा लगा। मैं अपने आपको इस स्कूल का राजकुमार समझने लगा। मेरा उठना-बैठना ही बदल गया। सलीके से रहने लगा, और बराबर पढ़ने लगा। इसी बीच सर ने मक्खी मारना सिखा दिया। घर में मिले तो उसे पकड़ो, शीशी में भरो। अपने हाथ से मक्खी के डिसेक्शन के औजार बनाओ। घर की कई सुइयां और चिमटे बिगाड़ दिए, परंतु सब बना लिया।

मेरी मां ने पहले कभी मक्खी मारते नहीं देखा था। मुझे देखा तो बड़ी झल्लाईं। वह कोई बायलाजी नहीं पढ़ी हैं? मैंने कहा पढ़ने के लिए तो मार रहा हूं, मां। और उसके सामने ही मैं अपने औजारों से जिंदा मक्खी के टुकड़े-टुकड़े कर देता। वे बड़ी घिन करतीं और मुझे डांटतीं। किसने ये नए-नए ढोंग सिखाए हैं? मैंने अपने सर का नाम बता दिया। दो-चार मर्तबा वे हमारे यहां आ चुके थे। पर वह उस दिन बहुत गुस्सा हुईं और बोलीं, "आने दे तेरे सर को! तेरे सर पढ़ाते हैं कि मक्खी मारना सिखाते हैं? कैसा है तेरा स्कूल, और तेरे पढ़ाने वाले?"

हमें इन सर की वजह से पत्तों-पत्तों से प्यार हो गया था। उन्होंने हम से एलबम भी बनवाया था। उनके रेशे-रेशे से पहचान हो गई थी। पत्ते-पत्ते हमें बताते थे और हम समझते थे।

एलबम में तरह-तरह के पत्ते लगाए। मक्खी मारकर हमने उसके एक-एक अंगों का अध्ययन किया। हम उन अंगों को लिखकर सर को बताते। अगर हमारे देखने में मक्खी का कोई अंग हमसे छूट जाता तो वे हमसे दूसरी मक्खी पकड़वाते और फिर बताते कि कौन-सा अंग हमसे रह गया था। बाद में तो हम और ज्यादा बारीकी से देखने लगे।

हमने क्या-क्या नहीं बनाया? उनके कहने में आकर घर के कई पीपे, डिब्बे तोड़ दिए। पर पानी छानकर बता दिया। टेलिविजन हमने बनाया। आक्सीजन तैयार करने से लेकर फिल्टर पंप, आसवन उपकरण, पृथक्कारी कीप आदि-आदि।

सभी ने सब तरह के उपकरण बनाए परंतु ढंग सबके एक होते थे। हम सब में होड़-सी लग गई थी। यहां तक कि

मेरा पन्ना

हम अपना जेब खर्च उपकरणों को बनाने के लिये वस्तुओं को खरीदने में लगाने लगे। अचानक उन्हीं दिनों हमारे सर का तबादला हो गया। अब पढ़ते तो हम रोज ही हैं, पर तबसे स्कूल में एक अजीब-सा खालीपन लगता है।

सुधीर कुमार नागर
कक्षा ग्यारहवीं, उज्जैन

गधा सक्सेज़

इस घटना को मैं कभी नहीं भुला सकता, जब मैं आठवीं बोर्ड में था। ठंड के दिन थे। हमारी परीक्षाएं पास आती जा रही थीं। मैं अपने मित्रों के साथ रात में दस या ग्यारह बजे तक परीक्षा रूपी दानव को मारने के लिए तैयारी करता था। मेरे मित्र कुछ अंधविश्वासी थे। ठंड की एक रात हम सभी मित्र पढ़ रहे थे। ठीक उसी वक्त एक गधा महाशयजी ढेंचू-ढेंचू करके दहाड़ने लगे। इतने में हम मित्रों में से एक ने कहा—"भई जिस प्रश्न को हम लोग पढ़ रहे हैं, इसी समय गधा बोल रहा है तो यह प्रश्न परीक्षा में अवश्य आयेगा।" हम लोगों को उसकी बात पर विश्वास हो गया। जिस प्रश्न को हम सभी मित्र तैयार करते थे उस प्रश्न को "मोस्ट आई. एम. पी." और "गधा सक्सेज़", इत्यादि नामों से संबोधित कर निशान लगा दिया करते थे। उसके बाद अतिशीघ्र उस प्रश्न को याद कर लिया करते थे।

दूसरे दिन मैंने यह बात अपने बड़े भाई साहब व चाचाजी को सुनाई। उन्होंने कुछ क्षण सोचकर उस बात को सच बताया। उस दिन से तो रोज गधा रेंकने लगा और रोज हम उन प्रश्नों पर निशान लगा कर याद करने लगे। इस तरह हम चारों छात्रों के परचे अच्छे गए। परीक्षा में भी प्रथम नंबर से पास हो गए।

उसके बाद मैंने अपने घर जब गधा रोज रेंकने का जिक्र किया तो उसी समय मेरे बड़े भाई साहब बोल उठे—"मैंने तुम्हारी मूर्ख विचारधारा का फायदा उठाया! यह सोचकर कि क्यों न घर से थोड़ी दूर गधे को बांधकर रेंकाया जाए! ताकि तुम प्रश्न याद कर लो! बस, फिर क्या था मैंने पास के कुम्हार से गधा किराए पर लिया और उसे बांधकर रेंकाया! और इस तरह तुम मूर्ख पास हो गए!"

इस बात को सुनकर मैं आश्चर्य चकित हो गया। मेरे मित्रों को जब मैंने यह सुनाया तो वह भी आश्चर्य में पड़ गए। तभी से यह घटना मेरे मानस पटल पर अंकित है। भुलाने से भी नहीं भूलता।

केदारनाथ तुलसीराम मालपुरे
हरदा

फूलों को हमें कभी नहीं मारना चाहिए



छोटी-छोटी क्यारियां,
इनमें खिले नन्हे फूल,
फूलों को हमें कभी नहीं मारना चाहिए,
इन पर हमें दया रखना चाहिए।

ये हमेशा मुस्कराते हैं,
यही इनकी सुंदरता है।
छोटी-छोटी क्यारियां,
इनमें खिले फूल
अगर इनके पास छोटे बच्चे रख दो
तो ये कितने सुंदर लगते हैं।

ये हमेशा मुस्कराते हैं,
यही इनकी सुंदरता है।
छोटी-छोटी क्यारियां,
इनमें खिले नन्हे फूल।

देखो, पानी में कमल के फूल,
पानी में तैरती बतखें,
कितनी सुंदर दिखती हैं
छोटी-छोटी क्यारियां, इनमें खिले नन्हे फूल।

मूल चित्र कपड़ा, रंग और प्याज की झिल्ली से बना है।

अपर्णा मेहरा
कक्षा आठवीं, भोपाल

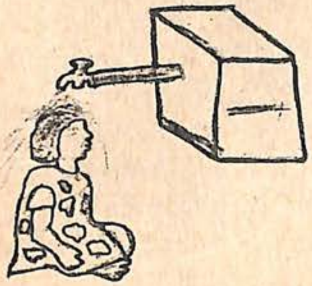


शाहीन
कक्षा आठवीं, भोपाल

एक नन्ही-मुन्नी बच्ची

एक नन्ही-मुन्नी बच्ची
खेल रही थी धूल में
हाथ-पांव भूरे हो गए उसके
फिर भी खेलती रही धूल में





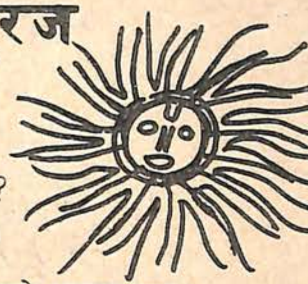
एक नन्ही-मुन्नी बच्ची
नहा रही थी नल में
ठंड लग रही थी उसको
फटे हुए कपड़े में



एक नन्ही-मुन्नी बच्ची
जा रही थी स्कूल
हाथ में भारी बस्ता लिए
दुख रहे थे हाथ फिर भी
टांगे हुए थे बस्ता
एक नन्ही-मुन्नी बच्ची

अनुराग अग्रवाल
कक्षा आठवीं, पिपरिया

सूरज



सूरज क्यों गरमाता पापा
समझ नहीं ये आता पापा।
कौन है आग जलाता पापा?
कोई नहीं बतलाता पापा।।

आओ बेटे मैं समझाऊं, तुमको इसका राज।
ये जानो, सूरज पर है जलने वाली गैस,
स्वयं जो जलती और जलाती, सूरज को गरमाती।।
धरती को झुलसाती, वर्षा भी करवाती।
सूरज की गर्मी का कारण सबसे जाकर कहना।।

सविता सोनी
कक्षा आठवीं, रामपुर (होशंगाबाद)

चूहा मछली

यूरोप में पाई जाने वाली चूहा मछली पानी पर तैरते पक्षियों का शिकार कर अपना पेट भरती है। इसी प्रकार अमरीका की गूज फिश बतख, हंस आदि का शिकार करती है।

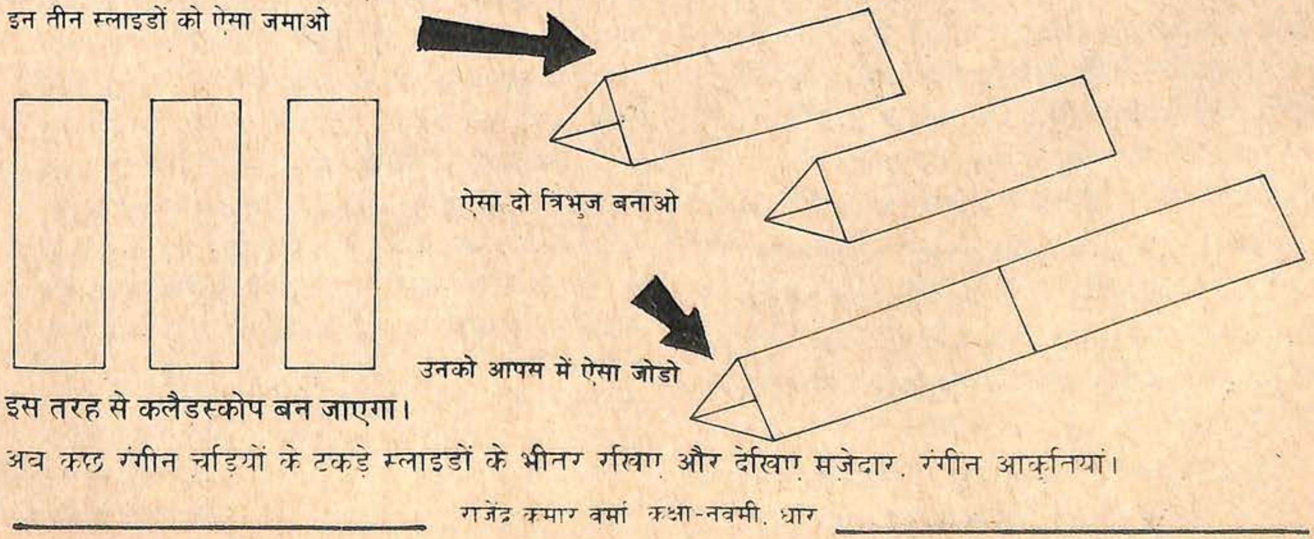
पूनम कुशवाह, दसवीं, ग्वालियर

कलैडस्कोप

दोस्तो, आइए और छह स्लाइड (कांच की 25 सेंटीमीटर लंबी पट्टी) में एक मजेदार खेल देखिए।

उपयोगी सामग्री: छह कांच के स्लाइड, कुछ रंगीन चूड़ियों के टुकड़े।

खेल तैयार करना: तीन स्लाइड ले लो। तीनों को आपस में मिलाकर त्रिभुज की तरह आकृति बनाओ (चित्र-1)। ठीक इसी तरह तीन और स्लाइड लो। उन्हें भी त्रिभुज के आकार में आपस में मिलाओ। तुम्हारे पास दो त्रिभुज हो गए। अब एक त्रिभुज को दूसरे त्रिभुज के अंदर फिट करो, ताकि एक लंबा त्रिभुज आकार का ट्यूब बन सके। इन दोनों त्रिभुजों को धागे से लपेटकर बांध लो। पर बांधने के पहले स्लाइडों को कागज से लपेट कर एक तरफ के खुले मुंह को भी कागज से बंद करना होगा।



अब कुछ रंगीन चूड़ियों के टुकड़े स्लाइडों के भीतर रखिए और देखिए मजेदार, रंगीन आकृतियां।

राजेंद्र कुमार वर्मा कक्षा-नवमी, धार

मेरा स्वप्न



अलका, भोपाल

एक दिन मैंने रात में सोते-सोते एक स्वप्न देखा। वह कुछ अलग ही ढंग का था। वह फिल्मी दुनिया से कुछ मिलता जुलता सा है।

मैं अपने स्कूल में होने वाले नाटकों में भाग लेता हूं। गाना गाता हूं। अच्छी तरह से अभिनय करता हूं। अच्छी तरह डायलाग बोलता हूं। मेरे स्कूल के लोग मुझे अपने नाटकों में शामिल करते हैं। धीरे-धीरे मेरी ख्याति फैलती गई। मुझे कई जगह से प्रोग्राम देने के लिए बुलाया जाने लगा। मैं हर जगह जाने लगा।

एक दिन मुझे फिल्म जगत के अशोक कुमार मिले। उन्होंने मुझसे कहा, ''तुम जी जान से मेहनत करो। सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी।''

एक दिन मेरे घर के सामने एक शानदार कार आकर रुकी। उसमें से बाल कलाकार मास्टर राजू एव मास्टर रवि निकलकर आए। फिर उन्होंने मुझे अपने साथ फिल्मों में काम करने को कहा। फिर मैं बंबई में रहने लगा। फिर मेरे पास एक से एक चमचमाती नई चार-पांच कार थीं। शानदार बंगले में रहता था।

एक दिन मैं क्या देखता हूं कि मेरे घर गायक किशोर कुमार आए। उन्होंने मुझे अपने साथ गीत गाने को कहा। मैंने गीत नहीं गाया। उनके साथ मेरे भाई ने गीत गाया। गीत गाकर मेरे भाई ने तहलका मचा दिया। अब तो मेरा भाई कई फिल्मों में गीत गाने लगा।

मैं फटाफट फिल्में साइन करने लगा। मैं बाल सुपरस्टार बन गया। एक दिन प्रधान मंत्री से मिलने गया। उन्होंने मेरा स्वागत किया। उनके बच्चों से मिला। उनसे गहरी दोस्ती हो गई।

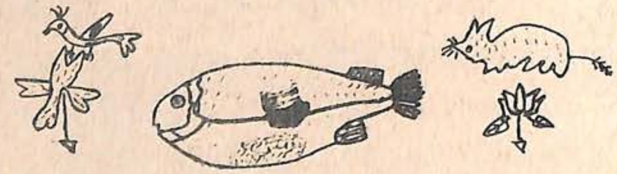
फिल्मी दुनिया में मैं मास्टर ब्रजमोहन के नाम से पुकारा जाने लगा। मेरी एक फिल्म आधी बन चुकी थी। उसकी बाकी शूटिंग रह गई थी। वह शूटिंग नटराज स्टूडियो में हो रही थी। उसमें सुपरस्टार अमिताभ बच्चन मेरे बड़े भाई का रोल कर रहे थे।

उस फिल्म में एक सीन इस प्रकार था। मैंने स्कूल में एक लड़के को मारा। जब मैं घर आया तब मेरे बड़े भाई अमिताभ (लम्बूजी) मेरा इंतजार कर रहे थे। उनसे किसी ने कह दिया था कि इसने एक लड़के को मारा है। लम्बूजी खड़े मेरी राह देख रहे थे। फिर उन्होंने मुझको एक जोरदार चांटा मारा कि इतने में मेरी नींद ही खुल गई।

भाईया, मैंने अपनी इतनी छोटी उम्र में यह स्वप्न पहली बार देखा था।

बृजमोहन ढिमोले
कक्षा आठवीं, पिपरिया

यह कहानी भगत सिंह पुस्तकालय (पिपरिया) द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में भेजी गई थी। अगले अंक में हम इस प्रतियोगिता की कुछ पुरस्कृत कहानियां और चित्र देंगे।



भारत में कई जगह मछलियां पाली जातीं है। मछली एक उपयोगी जंतु हैं। मछलियों को मनुष्य खाने के काम में लाते है। इनके अंडे भी खाने के काम में आते हैं। मछलियों को सुखाकर, पीसकर चारे के लेप में काम लिया जाता है। मनुष्य मनोरंजन के लिए विभिन्न रंग वाली मछलियां पालते हैं। मछलियों से तेल निकाला जाता है। मछलियों की चमड़ी से रंग-बिरंगे जूते बनाए जाते हैं। छोटे-छोटे थैले भी बनाए जाते हैं। मछलियों के सिर से एक प्रकार का गोंद भी बनाया जाता है। मछलियां मच्छरों के लारवा खाकर वृद्धि करती हैं मछलियों को सुखाकर खाने का चूर्ण बनाया जाता हैं। इस प्रकार मछली बहुत उपयोगी जंतु है।

बद्रीलाल परमार
कक्षा आठवीं, देवास



स्वतंत्रता

एक अनमोल रत्न

उषा राव



चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

सचमुच, जब भी वह घटना मेरे समक्ष आती है, मन ग्लानि एवं पश्चाताप से भर जाता है। और ऐसे लगता है मानो मैंने जीवन में एक बहुत बड़ा पाप किया हो। शायद उसका कभी भी प्रायश्चित नहीं हो पाएगा।

वह घटना इस प्रकार है। हम लोग भोपाल में रहते थे। हमारे मोहल्ले में मेरे अनेक साथी थे। हम सब परस्पर मिल-जुल कर खेला करते थे।

एक दिन हम सभी बच्चे खेलते-खेलते एक हरे-भरे बगीचे में जा पहुंचे। अचानक एक लड़की की नज़र अमरूद के वृक्ष पर सुंदर नीली-पीली रंग की नीलकंठ नामक चिड़िया पर पड़ी। उसने हम सबको वह चिड़िया दिखाई। हम सभी उसे देख कर मंत्रमुग्ध से हो गए। तुरंत हम सब ने योजना बनाई कि क्यों न इसे पकड़ा जाए। स्वीकृति तो सबकी थी ही।

एक बच्चे ने दौड़कर पास ही में पड़ा कपड़े का टुकड़ा उठाया तथा एक निडर बच्चे को देकर कहा कि तुम नीलकंठ को चुपके से जाकर कपड़े से झपट्टा मारकर पकड़ लो।

चूंकि वृक्ष की डाल, जिस पर नीलकंठ बैठी थी, बहुत झुकी हुई थी अतः उस लड़के को उसे पकड़ने में ज्यादा कठिनाई नहीं हुई। चिड़िया को पकड़ते ही हम बच्चों में खुशी की लहर दौड़ गई।

हमने उसे एक छोटे से पिंजरे में कैद कर दिया और उल्लास पूर्वक अपने घरों की ओर चल पड़े। वहां पिंजरे में उसके लिए खाने को एक कटोरी में कुछ दाने, फल और पानी भी रख दिया गया। परंतु हमें उसके नियमित भोजन के बारे में जानकारी नहीं थी। इतना करने के बाद हम पिंजरे को सुरक्षित स्थान पर रख कर अपने-अपने घरों की ओर चल दिए।

पौ फटते ही हम सभी उत्सुकता वश उस पिंजरे की ओर नीलकंठ की खैर-खबर लेने दौड़े। परंतु मैंने वहां का जो दृश्य देखा वो कल्पना से परे था। दो-चार बच्चे पिंजरे के चारों ओर सिर झुका कर खड़े थे। मैंने जैसे ही झांक कर देखा वैसे ही मेरे शरीर में कंपकपी सी छूट गई। और मेरा मन दुःख से भर गया। इस पिंजरे में कैद नीलकंठ ने, जो स्वतंत्र रहने की आदी थी, कुछ घंटों की गुलामी सहन न कर सकी और प्राण त्याग दिया। मुझे देखते-देखते रुलाई आ गई। और उस समय का अचानक ही अहसास हो आया, जब हमारा देश अंग्रेजों की बेड़ियों का गुलाम था। हम स्वतंत्रता के ख्वाब देखा करते थे। अनेक देशभक्तों ने इसी की प्राप्ति हेतु नीलकंठ चिड़िया की भांति अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

उसके बाद तो इस घटना ने मेरे अंतर्मन को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया। जब भी कभी वह घटना मेरे सामने आती तो मैं उस करुणामय दृश्य से सिहर उठती थी।

मैंने उसी दिन से प्रण किया कि आगे से मैं कभी भी किसी भी प्राणी को इस प्रकार गुलामी के बंधन में नहीं जकड़ूंगी और न ही किसी साथी को ऐसा करने दूंगी वरन् उनकी सुरक्षा हेतु हर दम आगे रहूंगी।

सचमुच, स्वतंत्रता किसी भी मनुष्य अथवा प्राणी के लिए अनमोल रत्न की भांति होती है।

उषा राव हरदा में रहती हैं। वे ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा हैं।



तेंदुए की चतुराई

चंद्र मोहन व्यास

चित्र : चंदन सिंह भट्टी

वन्यप्राणियों की बुद्धि चतुराई की इस श्रृंखला में हम तुम्हें तेंदुए के बारे में बता रहे हैं। यह जानवर शारीरिक शक्ति में तो शेर से कमजोर है। परंतु इसमें चालाकी, छठी इंद्रिय की सजगता एवं चपलता कूट-कूट कर भरी रहती है। वन्यप्राणी जगत में यही ऐसा जानवर है जो कि अपने शिकार को पेड़ों की ऊंची-ऊंची शाखाओं पर टांग कर आ जाता है। जिससे उसकी अनुपस्थिति में कोई उसके शिकार पर हाथ साफ न कर सके। जबकि तेंदुआ महाशय स्वयं दूसरों के शिकार पर हाथ साफ करने में सिद्धहस्त होते हैं।

हम तुम्हें एक पुरानी घटना सुना रहे हैं। एक तेंदुए ने जिस प्रकार लंगूर जैसे जानवर का शिकार किया, वह अपने आप में अद्भुत है। यह घटना नगरी सिहावा (रायपुर, मध्य प्रदेश) के जंगलों की है।

सन् 1970, जून की दोपहर में हम लोग अपना अनुसंधान मापन कार्य करके विश्राम कर रहे थे। चूंकि गरमी अधिक थी, इस कारण वातावरण बिलकुल शांत था। नीचे दूर सूखे नाले में किनारे पर लगे सेमल के पेड़ पर कुछ लंगूरों का झुंड भी विश्राम कर रहा था। एक तेंदुआ भी उसी नाले में दिखा। वह इतना कमज़ोर व लड़खड़ा रहा था कि लगता था प्यास और भूख के कारण शायद 1-2 घंटे ही जीवित रह सके तो बहुत है। ज्यों ही वह पेड़ के नीचे आया, निढाल होकर गिर पड़ा।

पेड़ के नीचे तेंदुए को देख कर लंगूर घबराहट में काफी उछल-कूद करने लगे। करीब आधे घंटे पश्चात् वे कुछ-कुछ शांत होने लगे। शायद वे समझ रहे थे कि तेंदुआ मर गया है।

उधर हम लोगों को भी यही धोखा हो रहा था कि संभवतया यह तेंदुआ दम तोड़ चुका है। जब पेड़ के ऊपर लंगूर थोड़े शांत हुए तब दल के मुखिया ने कुछ टहनियां तोड़ कर तेंदुए के ऊपर फेंकी, यह देखने के लिए कि तेंदुआ जीवित है या मृत। टहनी गिरने पर भी तेंदुआ पूर्ण रूपेण निचेष्ट पड़ा रहा।

जब टहनी व अन्य सामग्री फेंकने के बाद भी वह नहीं हिला, तो मुखिया लंगूर अपने दो-तीन साथियों सहित बड़ी सतर्कता से नीचे उतरा और उसकी पूंछ पकड़ कर खींची। तेंदुआ पूर्ववत निश्चल रहा। ज्यों ही कुछ लंगूर आश्वस्त होकर उसके पास आए, तुरंत बिजली की तेजी से उसने दो लंगूरों को झपट लिया।

इन दोनों लंगूरों को खाकर चलता बना। खाते समय व शिकार करते समय तेंदुए में कोई कमजोरी या बीमारी का लक्षण नहीं दिख रहा था। वह बिलकुल सामान्य लग रहा था। यह दिखावा उसने धोखे से शिकार करने के लिए किया था।

(शेष पृष्ठ 17 पर)

घुमक्कड़



मूंगफली के पारखी

ऐसी सब्जियां, फ़ल तथा फसलें मनुष्यों द्वारा जल्दी अपनाई जाती हैं जो खाने में स्वादिष्ट और पौष्टिक होती हैं, तथा जिनके बहुत अधिक उपयोग मनुष्य के लिए होते हैं। ऐसी फसलें शीघ्र ही अधिक से अधिक स्थानों में फैल जाती हैं।

मूंगफली का उदाहरण लें। शुरू-शुरू में मूंगफली केवल अजायबघर के हाथियों और बंदरों को खिलाने के काम आती थी। परंतु, एक वैज्ञानिक ने मूंगफली का इतिहास ही बदल दिया। एक दिन कुछ किसान वैज्ञानिक के पास आए। किसानों ने बताया कि उनकी कपास की फसल हर साल कम होती जा रही है। वैज्ञानिक ने उन्हें कपास छोड़कर मूंगफली उगाने की सलाह दी। पर किसानों को यह सलाह ठीक नहीं लगी। क्योंकि मूंगफली केवल बंदरों और हाथियों को खिलाई जाती थी। कोई और उपयोग नहीं था। उधर वैज्ञानिक महोदय ने अपनी प्रयोगशाला में मूंगफली पर शोध करना शुरू किया। कुछ ही समय में उन्होंने मूंगफली के तीन सौ से ज्यादा उपयोग पता किए।

मूंगफली से तेल, खली, दूध, मक्खन, पनीर, डिटरजेंट पालिश, दाढ़ी बनाने वाली क्रीम इत्यादि बहुत सी वस्तुए प्राप्त हो सकती हैं। यह सबसे पहले इन्हीं वैज्ञानिक महोदय ने खोजा था। इनका नाम था जार्ज वाशिंगटन कारवर। ये नीग्रो थे। नीग्रो उस समय (और शायद आज भी) अमरीका में सबसे ज्यादा गरीब और दबा हुआ समुदाय था।

मछली (पृष्ठ 10 से)

"हां," वह बोली, "मुझे मालूम है।"

"क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि सारस की थैली बहुत बड़ी है?"

"हां, यह भी मालूम है।" छोटी ने जवाब दिया। कुछ मछलियों ने कहा, "यह सब जानते हुए भी तुम आगे जाना चाहती हो?"

"हां," छोटी मछली बोली, "कुछ भी हो, मुझे आगे जाना है।"

चारों तरफ यह बात फैल गई कि बहुत दूर से एक छोटी-सी काली मछली आई है और वह इस नदी का अंत खोजने जा रही है। उसे किसी भी चीज का डर नहीं। यहां तक कि वह सारस से भी नहीं डरती।

कुछ छोटी मछलियां उसके साथ जाना चाहती थीं लेकिन अपने माता-पिता के कारण चुप रहीं। उनमें से एक बोली, "यदि सारस का भय नहीं होता तो हम तुम्हारे साथ चलते। हमें उसकी थैली से डर लगता है।"

कूदने की क्षमता



पिस्सू एक छोटे से कीड़े का नाम है। पर यह पिस्सू महोदय बड़ी लंबी छलांग लगाते हैं। यह 32 सेंटीमीटर (13 इंच) तक कूद सकता है। यदि हम इस छोटे कीड़े का मुकाबला करना चाहें तो वजन के अनुपात से हमें 350 मीटर (1200 फुट) लंबी छलांग लगानी पड़ेगी।

तुम जानते ही हो कि आदमी की लंबी कूद का विश्व रिकार्ड केवल 9 मीटर (29 फुट 2 इंच) के आसपास है। स्त्रियों का रिकार्ड 7 मीटर (23 फुट 3 इंच) है।

खड़े-खड़े आदमी करीब 3.5 मीटर तक कूद सकता है जबकि स्त्री का रिकार्ड करीब 2.75 मीटर है।

आदमी को मेंढ़क भी पीछे छोड़ देता है। मेंढ़क करीब 5.25 मीटर (12 फुट 2 इंच) कूद सकता है। पर कंगारू, मेंढ़क और मनुष्य दोनों को पीछे छोड़ता है। एक कंगारू 12 मीटर (40 फुट) तक कूद सकता है।

तेंदुए (पृष्ठ 16 से)

इससे भी मजेदार बात यह है कि जिस क्षेत्र में तेंदुआ रहता है, उसकी पूरी भौगोलिक जानकारी रखता है। कभी-कभी अपने शिकार को खदेड़ता है, तथा छोटे रास्ते (शार्ट कट) चुन कर पुनः घात लगा कर शिकार को दबोच लेता है। इस व्यूह रचना के साथ-साथ तेंदुए में छिपने की एवं धैर्य पूर्वक शिकार की प्रतीक्षा करने की अभूतपूर्व क्षमता रहती है। कभी-कभी शिकार की प्रतीक्षा में नाले-नदियों के किनारे 8-10 घंटे तक छिपा पड़ा रहता है। पानी पीने ज्यों ही कोई जानवर आता है, यह पीछा करके उसका शिकार करता है।

लेखक, राज्यवन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर में प्रशासनिक अधिकारी हैं।

प्रयोग सुझाओ

कुछ ऐसे प्रयोग सुझाओ जिस से यह सिद्ध हो कि पौधे और मनुष्य श्वसन क्रिया में कार्बन डाईआक्साइड छोड़ते हैं।



हेलीकाप्टर

तुमने ऐसे बीजों को जरूर देखा होगा जो पेड़ों से गिरने पर लट्टू की तरह घूमते-घूमते नीचे गिरते हैं। तुमने चित्रों में हेलीकाप्टर के पंखों (नोदक/प्रोपेलर) को घूमते हुए भी देखा होगा।

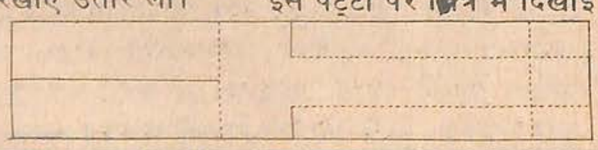
इन बीजों के 'पंखों' (नोदक) का काम है उनकी उड़ान में मदद करना। ये बीज हवा में उड़कर दूर-दूर तक फैल जाते हैं। वास्तव में उनके ये पंख इसी काम के लिए होते हैं। कभी-कभी नई जगहों में ये उग भी आते हैं। यह प्रकृति का एक खास तरीका है कुछ पेड़-पौधों के जीवन-चक्र के संदर्भ में।

क्या हेलीकाप्टर के नोदक और इन बीजों के 'पंख' एक जैसे ही काम करते हैं? क्या इन दोनों के काम करने के पीछे एक ही सिद्धांत लागू होता है? तुम इस पर विचार करो।

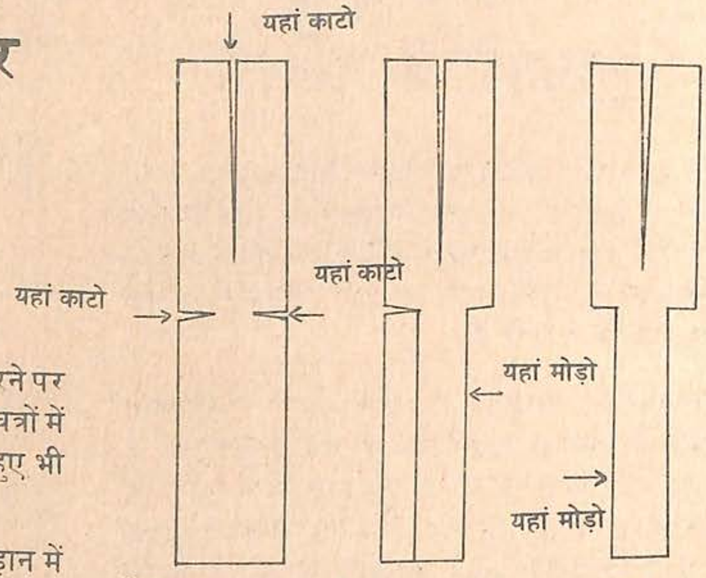
अभी हम तुम्हें कागज का हेलीकाप्टर बनाने का एक सरल तरीका सुझा रहे हैं। तुमने पहले भी कागज से हवाई जहाज और नाव बनाई होंगी। लो, यहां एक और नई चीज।

पहले एक कागज पट्टी लो। पट्टी कम-से-कम 22 सेंटीमीटर लंबी और 5 सेंटीमीटर चौड़ी होना जरूरी है।

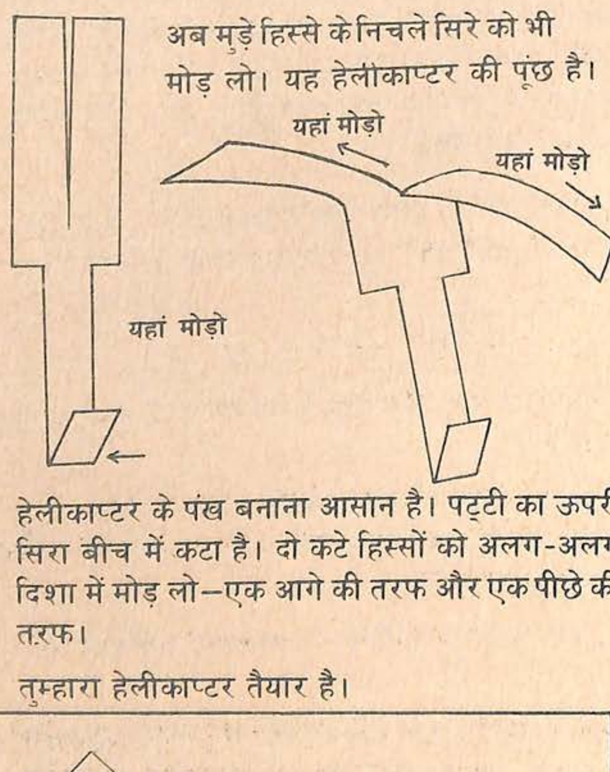
इस पट्टी पर चित्र में दिखाई रेखाएं उतार लो।



ब्लेड या कैंची से कागज को चित्र में बताए स्थानों पर काट लो।



हेलीकाप्टर का 'शरीर' बनाने के लिए कागज की पट्टी को चित्र में दिखाए स्थान पर मोड़ लो। ऐसे ही, दूसरी साइड भी मोड़ लो।

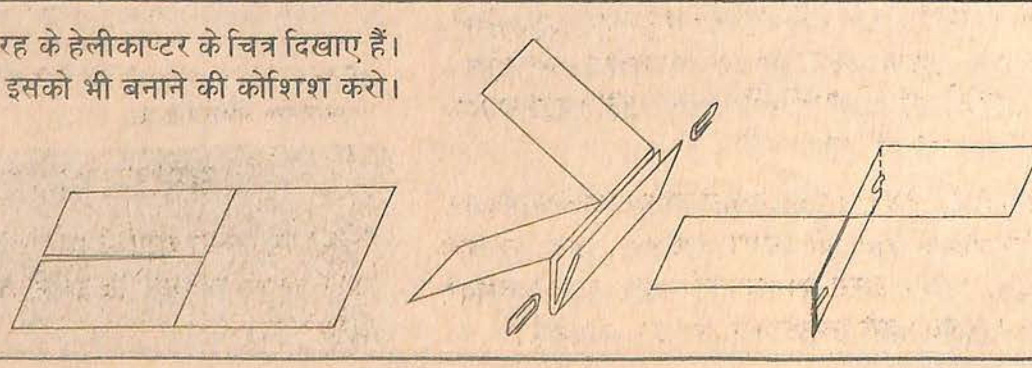


अब मुड़े हिस्से के निचले सिरे को भी मोड़ लो। यह हेलीकाप्टर की पूंछ है।

हेलीकाप्टर के पंख बनाना आसान है। पट्टी का ऊपरी सिरा बीच में कटा है। दो कटे हिस्सों को अलग-अलग दिशा में मोड़ लो—एक आगे की तरफ और एक पीछे की तरफ।

तुम्हारा हेलीकाप्टर तैयार है।

यहां एक दूसरी तरह के हेलीकाप्टर के चित्र दिखाए हैं। तुम चित्र देखकर इसको भी बनाने की कोशिश करो।



जादू

चमत्कार,

या....



यहां प्रकाशित चित्र तुम देख रहे हो, उसमें महिलाएं अंगारों पर चलकर जा रही हैं। ये महिलाएं बंबई की लोक विज्ञान संघटना की कार्यकर्ता हैं। यह संस्था समाज में फैले अंधविश्वासों को विज्ञान की मान्यताओं के आधार पर दूर करने का प्रयत्न कर रही हैं।

अंगारों पर से पैदल चलकर निकल जाना क्या चमत्कार है या कोई जादू! वास्तव में न तो यह जादू है और न चमत्कार!

हमारे पैर के तलुए की चमड़ी अन्य हिस्सों के मुकाबले कठोर होती है। गांव में रहने वाले या नंगे पैर चलने-फिरने वालों की तो और भी कठोर। उस चमड़ी पर आग देर से असर करती है। दूसरी बात जलने के लिए कम-से-कम तीन सेकंड तक आग के संपर्क में रहना जरूरी है। पर चलते समय हम अपना पैर तीन सेकंड से भी कम समय में एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रख देते हैं। तीसरी बात हम आमतौर पर अंगारे से नहीं बल्कि उसकी राख के चिपकने से जलते हैं।

सोचो क्या अंगारे ऐसे ही सड़क पर बिछा दिए जाते हैं? नहीं! इसके लिए कम-से-कम दस फुट लंबा, तीन फुट चौड़ा और दो फुट गहरा गड्ढा खोदा जाता है। इसमें लकड़ी जलाई जाती है। बनने वाले अंगारों को दबा-दबा कर भरा जाता है। ठीक वैसे ही, जैसे सड़क बनाते समय गिट्टी भरी जाती है। सोचो ऐसा क्यों करते हैं। एक और महत्वपूर्ण बात। इन अंगारों पर राख नहीं जमने दी जाती है। कुछ लोग नीम की पत्तियों से (पत्तियां किसी और पेड़ की भी हो सकती हैं) हवा करके राख उड़ाते रहते हैं।

पर सुनो तुम खुद यह चमत्कार मत करने लगना। इसकी तैयारी के लिए अनुभवी लोगों की जरूरत होती है। अंधविश्वासों को दूर करने का काम कई और स्वयं सेवी संस्थाएं कर रही हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में और खासकर विकास की प्रक्रियाओं में। तुम ऐसी संस्थाओं से संपर्क कर सकते हो। कुछ पते यहां हैं—



एकलव्य
नेहरू कालोनी, हरदा, (म. प्र.)

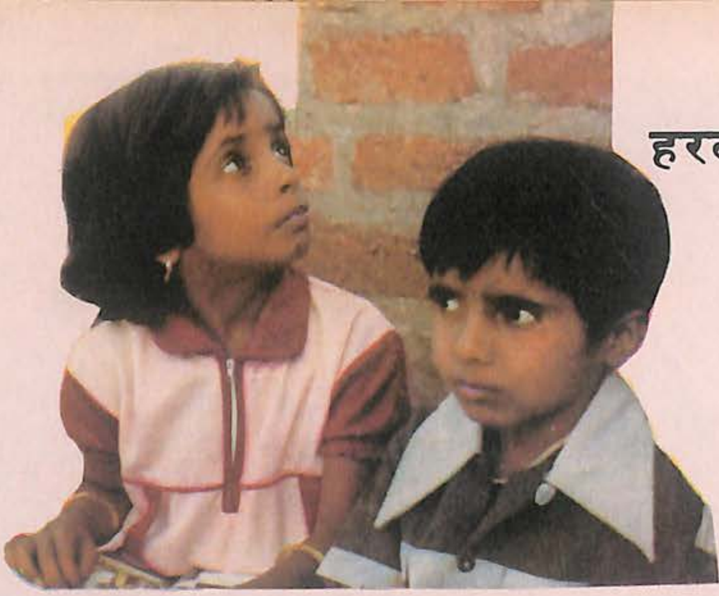
शहीद भगतसिंह पुस्तकालय
पिपरिया (होशंगाबाद, म.प्र.)

किशोर भारती,
बनखेड़ी (होशंगाबाद, म. प्र.)

विदूषक कारखाना
अनूपपुर (शहडोल, म. प्र.)

लोक विज्ञान संघटना
759/97 डेक्कन जिमखाना, पुणे

एकलव्य विचार मंच
30, समाधान, नयापुरा, देवास



हरदा: अपनी पसंद की जगह

बच्चों के छोटे हाथों को
चांद-सितारे छूने दो,
चार किताबें पढ़कर ये भी
हम जैसे हो जाएंगे!
—निदा फ़ाजली

शाम को ठीक चार बजे वे आने लगते हैं। छोटे बच्चों से लेकर हाईस्कूल के छात्र तक। शहर के कोने-कोने से वे आते हैं। अमीर बच्चे, गरीब बच्चे। कई तो नंगे पांव आते हैं, और कई कार पर सवार होकर। बारिश में भी आते हैं— कोई छाता लेकर, कोई भीगते-भीगते पहुंचते हैं। मई-जून की तेज धूप से भी नहीं डरते हैं ये बच्चे। वे आते रहते हैं।

शुरू-शुरू में ये बच्चे किताबें पढ़ने आते थे। क्योंकि एकलव्य के हरदा केंद्र ने एक छोटा-सा पुस्तकालय खोला था—खास स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए। किताबें पढ़ना अच्छी बात है। पर दिन भर या घंटे भर भी किताब पढ़ते रहना जरा मुश्किल लगता है, और है भी। बच्चों को पुस्तकालय में शांत रखना असंभव था। धीरे-धीरे उनके साथ कुछ और करने की जरूरत सामने आई। और इस तरह एक छोटा सा "खेल/कामधाम केंद्र" शुरू हुआ (हम ऐसे केंद्रों को 'सवालीराम क्लब' के नाम से पुकारते हैं)।

इस केंद्र में बच्चे चित्र बनाते हैं, माडल बनाते हैं, और कभी कहानियां/कविताएं सुनाते हैं। कभी छोटे-छोटे नाटक खेलने की कोशिश करते हैं.....। कुछ बड़े बच्चों को शतरंज खेलने का शौक था। उनको देखते-देखते शतरंज का चस्का औरों को लगा। अब तो बहुत सारे बच्चों ने शतरंज खेलना सीख लिया है। अब शतरंज की प्रतियोगिताएं भी होती हैं। क्विज प्रतियोगिताएं भी होती हैं— केंद्र में और स्कूलों में भी। इस तरह बच्चों को बहुत सी मजेदार चीजें सीखने का मौका मिला, और अब भी मिल रहा है।

बच्चों के खेल-खिलौने और प्रयोग सामग्री बनाने के लिए एक वर्कशाप बहुत ही आवश्यक है। ऐसी एक वर्कशाप शीघ्र ही हरदा में खोलने की कोशिश की जा रही है। इस वर्कशाप के तीन मुख्य कार्य होंगे:

- बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौने और खेल बनाना,
- बच्चों को अपने हाथों से आसान खिलौने और अन्य चीजें बनाने का मौका देना,
- स्कूलों में विज्ञान एवं अन्य विषय पढ़ाने की प्रयोग सामग्री या किट को विकसित करना।

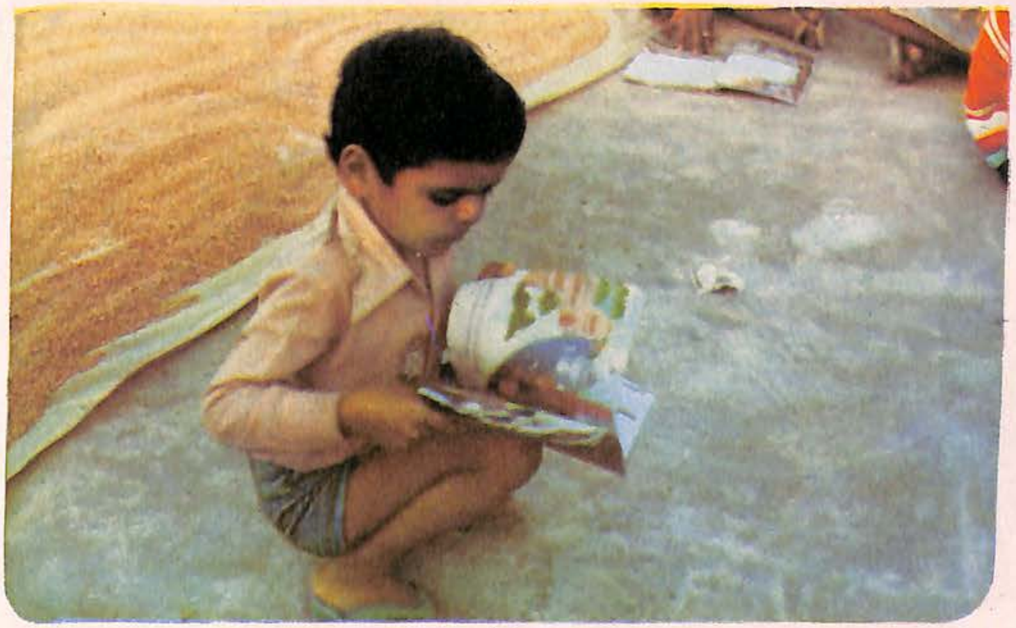
चकमक के पन्नों में हम तुम्हें ऐसे खिलौने और पहेलियों के बारे में बताएंगे, जो तुम खुद बना सकते हो। पर यदि तुम चकमक का इंतजार नहीं कर पा रहे हो तो सीधे हरदा केंद्र से इस पते पर संपर्क कर सकते हो:

एकलव्य,
हरदा केंद्र,
नेहरू कालोनी,
हरदा (म.प्र.) 461 331.



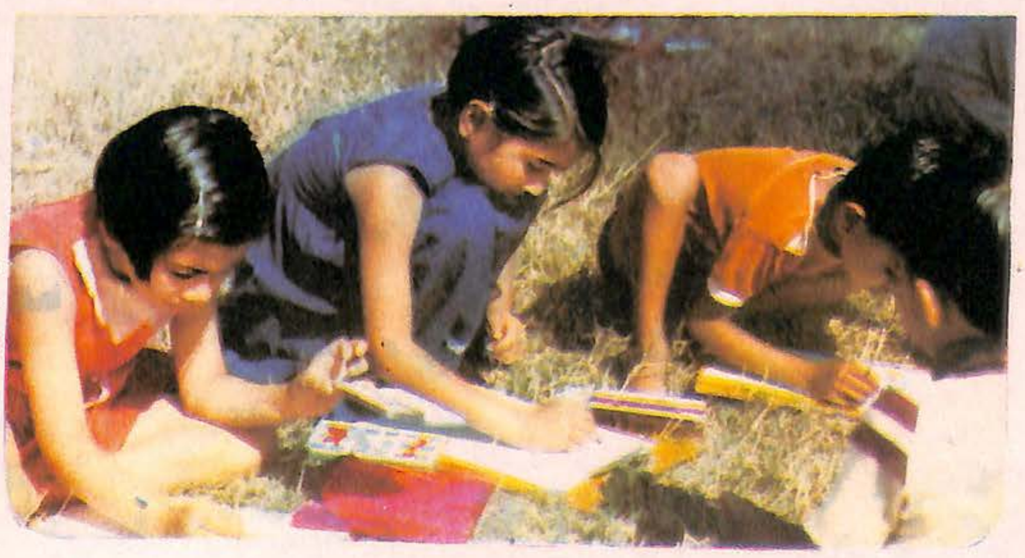
सबसे बड़ा गवैया
जंगल का यही था भैया
नाचें इसके ही गाने पर
सब ता...ता...थैया

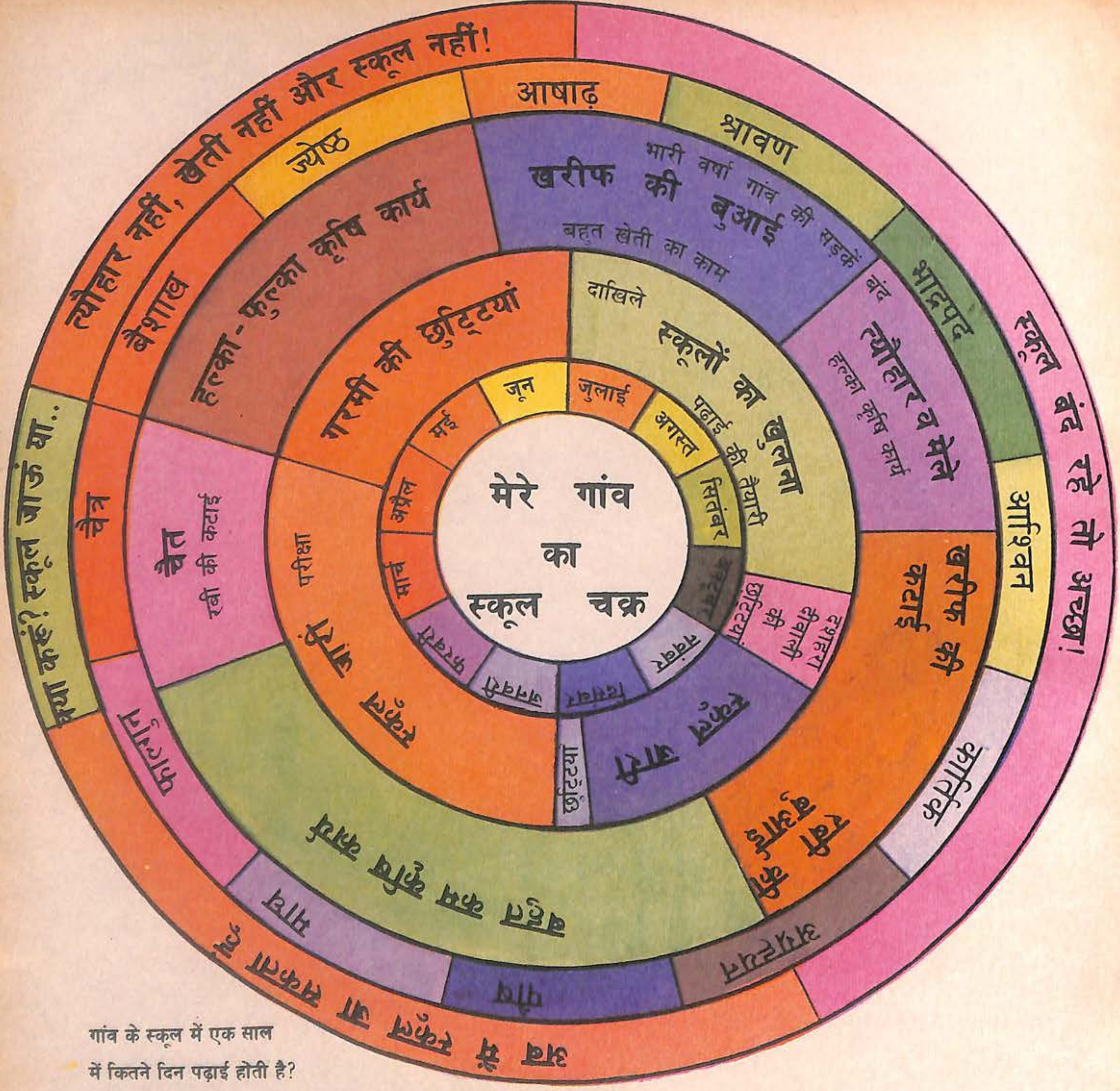




अन्नू जी पढ़ रहे
या पढ़ा रहे हो
राजा की या प्रजा की
कहानी कौन सी सुना रहे हो

हम पढ़ते हैं पुस्तक आकर
खेलकूद से मन बहलाकर
नई-नई चीजें रोज बनाते
ये है खेल-काम-धाम घर



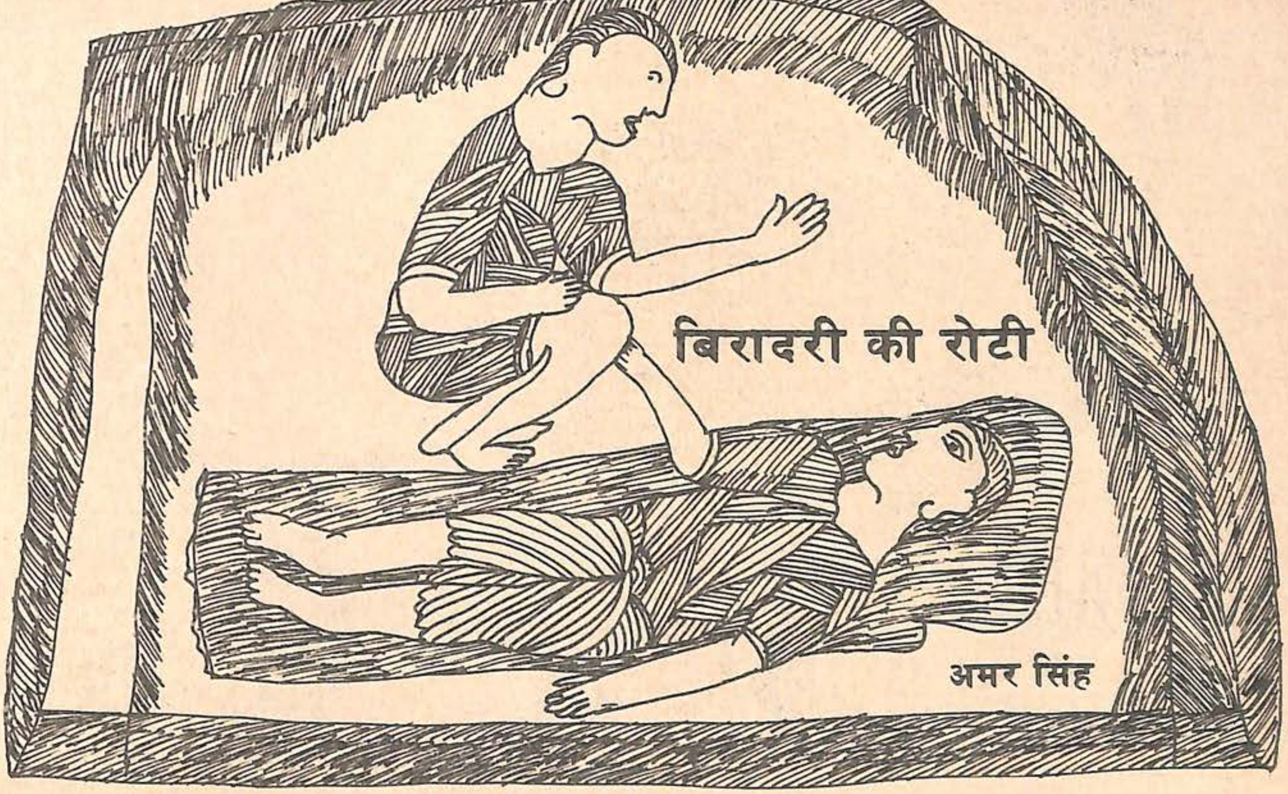


गांव के स्कूल में एक साल

में कितने दिन पढ़ाई होती है?

नियम के अनुसार एक साल में कम-से-कम 240 दिन स्कूल खुला रहना चाहिए। 220 दिन पढ़ाई के लिए, 20 दिन सामूहिक तथा अन्य कार्यों के लिए। कुछ लोगों का कहना है कि असल में पाठ्यक्रम साल में 150 दिन के लिए बनाए जाते हैं।

अब देखो एक प्रधान पाठक का अंदाज	दिन	योग			
			बाजार के दिन	18	
			बरसात में रास्ता बंद	25	
			दाखिलों के लिए	7	
साल में दिन	—	365	त्यौहार और मेले	15	
गरमी की छुट्टियां	75		गांव में गतिविधियां (शादी, मौत, कथा आदि)	10	
दशहरा, दीवाली और सरदी (दिसंबर) की			खेती के लिए	10	
की छुट्टियां	30		परीक्षा की तैयारी, मूल्यांकन आदि	30	
केंद्रीय व राजकीय छुट्टियां	18		आकस्मिक/वेतन/अन्य छुट्टियां	26	
रविवार की छुट्टियां	37				
कुल छुट्टियां		160	कुल दिन जिनमें पढ़ाई नहीं होती		141
पढ़ाई के दिनों का योग नियमानुसार	—	205	कुल दिन जब हम पढ़ाते हैं		64



बिरादरी की रोटी

अमर सिंह

चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

एक दिन लखना का दादा सबों को छोड़ गया। बिरादरी के लोग आते रहे। गांव के पंडितजी पत्रा कांख में दबाए हुए आए, "क्यों रे बीदो! तू अपने बाप के फूल गंगाजी नहीं ले जाएगा? श्राद्ध में कुछ दान दक्षिणा देगा कि नहीं रे? पीतल के बर्तन, एक बछिया, इक्यावन रूपए ब्राह्मण को दान करना ही चाहिए।"

बीदो बोला, "गंगाजी जाऊंगा महाराज। कहीं से भी कुछ-न-कुछ इंतजाम करूंगा। आपको भी दान दूंगा। गंगाजी के लिए बिरादरी के पांच भाई, अपने रिश्तेदार भी संग जाने को कह रहे हैं।"

बिरादरी के मुखिया रामधनजी आए तो बोलने लगे, "बीदो, बिरादरी की रोटी करेगा न रे? घी की कितनी टीन मंगवा रहा है? चीनी दो क्विंटल ले आना। गेहूं सात मन, बेसन दो मन खर्च हो जाएगा। लल्लन का बाप मरा था तो इससे भी ज्यादा सामान आया था। रोटी अच्छी दी थी।"

बीदो सुस्त आसमान देखता रहा। अब की खेत में कुछ नहीं हुआ। अकाल पड़ गया था। घर में फूटी कौड़ी भी नहीं है। बिरादरी की रोटी.....। बीदो लंबी सांस खींच कर रह गया।

बीदो बनिया की दुकान पर पहुंचा। बनिया ने बड़े प्यार से पुचकारकर अपने पास गद्दी पर बिठा लिया। बनिया लपर-लपर बोलता है, "अजु बीदो भईया! बिरादरी को रोटी देगा न?"

बीदो रूआंसा-सा रह गया। बनिए ने थपकिया देते हुए कहा, "अरे, मेरे होते हुए तू काहे फिकिर करता है रे? पूरी दुकान तेरी है। चाहे जो ले, चाहे जो बरत। अरे, ऐसे समय हम साथ नहीं देंगे तो कौन साथ देगा? समाज में रहना है तो सब व्यवहार करना ही पड़ते हैं। तू रुपयों की चिंता मत करे। बोल, छः हजार दे दूं? सामान मेरी दुकान से ले लेना। तू खेत और मकान के कागजात लेकर आ जाना। बस्स!"

बीदो ने खेत गिरवी रखकर बिरादरी को रोटी दे दी।

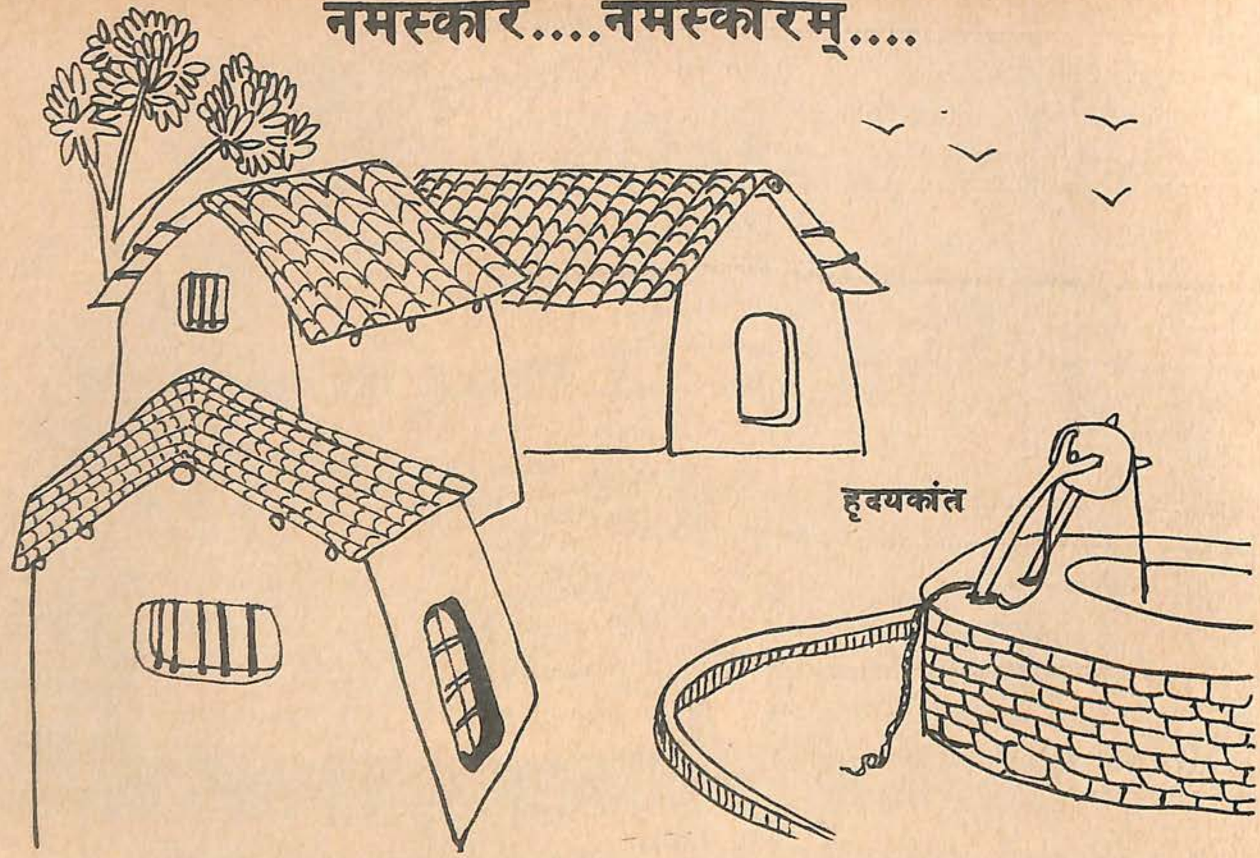
कई साल होने को आए। बीदो का परिवार मेहनत मजदूरी करके पेट भर लेता है। बीदो न तो ब्याज चुका पाया, न कर्ज ही उतार पाया। खेत भी नहीं छुड़ा सका। बनिया औरों से खेत जुतवा लेता है। फसल कटवाकर अपनी हवेली भर लेता है। बीदो का परिवार गांव से बाहर झुग्गी डालकर रहता है। उसका बेटा लखना भी अधपका हो गया है।

बीदो भी बीमार रहने लगा था। दो-एक दिन का और मेहमान लगने लगा। बिरादरी वाले आने-जाने लगे। सांझ को लखना बीदो से कहता है, "बापू, तू मरना मत। वरना हमको भी बिरादरी को रोटी करना पड़ेगी। पहली रोटी तो अम्मां को डकार गई। तुझको चाट रही है और हम लोगों को निचोड़ रही है। अबकी तू मरेगा तो दूसरी बार बिरादरी की रोटी देनी होगी।"

बीदो ने समझाया, "पगले। मौत से कौन बचा है? मैं आज नहीं तो कल मरूंगा ही। मगर, तू बिरादरी की रोटी मत देना।"

('लघु आघात' से साभार)

नमस्कार....नमस्कारम्....



हृदयकांत

हरि के पड़ोस वाले मकान में कल ही एक नया परिवार आया है। कल दिन भर वे लोग अपने घर का सामान जमाते रहे।

हरि तरह–तरह की अटकलें लगाता रहा उनके बारे में। वह बहुत उत्सुक था। उसे यह तो पता चल गया था कि वे लोग तमिलनाडू से आए हैं। उस परिवार में उसे अन्य लोगों के अलावा एक दस–बारह साल की लड़की भी दिखाई दी थी। यानी वह हरि की हम उम्र ही थी। हरि ने सोचा इस लड़की से ही इस परिवार के बारे में अधिक बातें जानी जा सकती हैं।

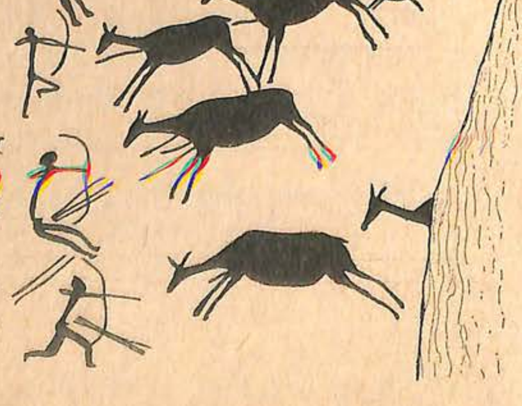
वह धीरे–धीरे उसके घर के दरवाजे पर पहुंचा और सकुचाते हुए बोला,

''जय राम जी की।''

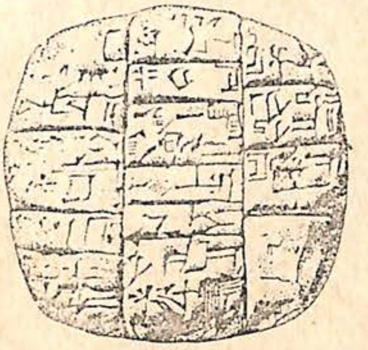
''ऐह?'' लड़की ने पूछा, ''एना वेनु।''

हरि को कुछ समझ न आया। उसने फिर दोहराया, ''जय राम जी की।''

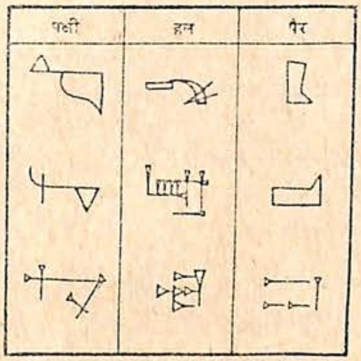
लड़की के चेहरे को देखकर उसे एहसास हुआ कि शायद वह समझ नहीं पा रही है। हरि ने एक बार फिर से कोशिश की। पर इस बार उसने ''जय राम जी'' की जगह 'नमस्कार' कहा।



यह प्रागैतिहासिक शैलचित्र प्राचीन स्पेन का है। गुफा की दीवार पर बने इस चित्र से पता चलता है कि उस समय तक (हिमयुग के बाद) मनुष्य धनुष-बाण आदि का इस्तेमाल करने लगा था। यह चित्र करीब 20,000 साल पुराना है। भारत में भी ऐसी कई गुफाएं हैं, जिनमें ऐसे शैलचित्र मिले हैं। मध्य प्रदेश में औबेदुल्लागंज के पास स्थित भीमबैठका उनमें से एक है। भीमबैठका पर विस्तृत लेख अगले किसी अंक में देंगे।







ऊपर: आज जहां इराक है वहां भी प्राचीन समय में सभ्यता विकसित थी। बाबुल या बेबीलोन जो करीब 4,000 वर्ष पुराने हैं, के मैदानों और नदी की घाटियों में प्राचीन सभ्यता मौजूद थी। खुदाई में पाए गए असीरियाई साम्राज्य के 2,000 वर्ष पुराने नगर में चित्रलिपि का विकास देखा जा सकता है। यह चित्र लिपि धीरे-धीरे कीलाक्षरी लिपि में परिवर्तित हुई (बाएं)। यहां लोग लिखने के लिए पेपाइरस का इस्तेमाल नहीं करते थे। वे मिट्टी की पट्टियां बनाते थे। इस लिपि में कोई एक हजार प्रतीक थे। हर प्रतीक पूरे शब्द या किसी एक अक्षर का बोध कराता था।

व्यापारियों को व्यापारिक लेन-देन में जल्दी लिखने की जरूरत पड़ती थी। कीलाक्षरी या चित्रलिपि में जल्दी-जल्दी लिखना मुश्किल था। इन व्यापारियों ने मिस्रवासियों के अनुभव का लाभ उठाया। मिस्रवासियों की लिपि में प्रतीक केवल शब्दों का ही नहीं अक्षरों एवं ध्वनियों का भी बोध करवाते थे। इस तरह फिनीशिया में एक वर्णमाला बनाई गई। इसमें 22 व्यंजन थे। लिखते समय स्वरों को छोड़ दिया जाता था।

नमस्कार शब्द सुनकर लड़की की आंखें चमक उठीं। "ओह हो।" उसने उत्तर में कहा, "नमस्कारम्।"

"मेरा नाम हरि है। तुम्हारा नाम क्या है?" हरि ने बातचीत आगे बढ़ाई।

लड़की सिर खुजाने लगी। हरि को लगा कि उसे हिंदी नहीं आती है।

लड़की ने कहा, "एना?"

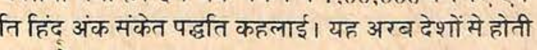
हरि भी हालांकि समझ नहीं पा रहा था कि लड़की क्या कह रही है। पर उसने कोशिश जारी रखी। हरि बोला, "नाम, नाम।" अपनी तरफ इशारा करके उसने दोहराया "हरि, हरि। मेरा नाम हरि है।"

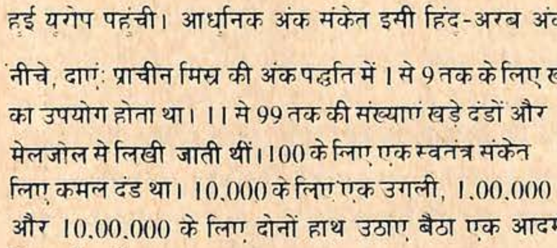
"ओह हो। नाम हरि।" लड़की ने दोहराया। आखिर उसे समझ आ ही गया कि इतनी देर से वह क्या कहने की कोशिश कर रहा था। लड़की बोली, "एन पेरू जानकी।"

हरि ने धीरे से दोहराया, "नाम पेरू, नाम पेरू।" हरि ने सीखा कि तमिल का पेरू, हिंदी का नाम है।

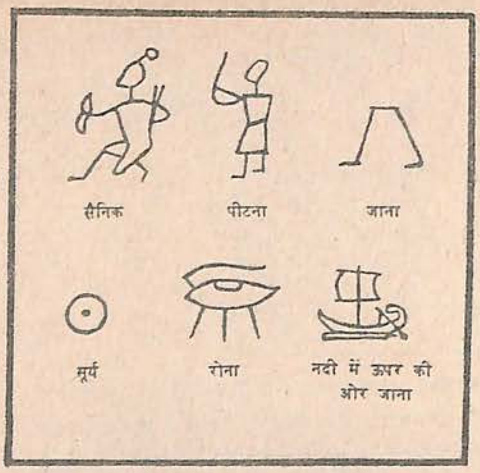
नीचे, बाएं: लगभग 5,000 वर्ष पहले के राजा का एक मुकुट प्राप्त हुआ है जो मिस्र देश का था। इस मुकुट पर युद्ध के समय पकड़े गए 4,00,000 बैलों, 14,22,000 बकरियों तथा 1,20,000 पुरुषों की संख्या को अंक संकेतों में दर्शाया गया है। इस अंक संकेत में 1,00,000 के लिए एक स्वतंत्र संकेत है। प्राचीन भारत में भी अंक संकेतों का काफी विकास हुआ। यह पद्धति हिंदू अंक संकेत पद्धति कहलाई। यह अरब देशों से होती हुई यूरोप पहुंची। आधुनिक अंक संकेत इसी हिंदू-अरब अंक संकेत से विकसित हुए हैं।

नीचे, दाएं: प्राचीन मिस्र की अंक पद्धति में । से 9 तक के लिए खड़ी रेखाओं (दंडों) का उपयोग होता था। 11 से 99 तक की संख्याएं खड़े दंडों और 10 के संकेत के मेलजोल से लिखी जाती थीं। 100 के लिए एक स्वतंत्र संकेत था। एक हजार के लिए कमल दंड था। 10,000 के लिए एक उंगली, 1,00,000 के लिए एक पक्षी और 10,00,000 के लिए दोनों हाथ उठाए बैठा एक आदमी। एक करोड़ के लिए भी संकेत था।











ऊपर, बाएं: मिस्र घाटी की सभ्यता के बारे में तुमने सुना या पढ़ा होगा। 5,000 वर्ष पुरानी यह सभ्यता इतनी विकसित थी कि सारी चीजों को याद रखना या दूसरों को मौखिक रूप से बताना संभव नहीं था। मिस्र वासियों को लिखने की आवश्यकता महसूस हुई। आरंभ में चित्रलिपि विकसित हुई। इस लिपि में सूर्य का चिन्ह एक गोला था, जिसके मध्य में बिंदु था। सैनिक को दिखाने के लिए धनुष-बाण लिए आदमी का चित्र बनाया जाता था। बाद में पूरे-पूरे शब्दों के चिन्ह बनाए जाने लगे, जो अलग-अलग ध्वनियों या शब्दों के हिस्सों को भी व्यक्त करते थे। लिखने के लिए मिस्रवासी पेपाइरस (नदी के किनारे उगने वाली एक घास) का कागज उपयोग में लाते थे।

ऊपर, दाएं: यह चित्र लिपि मिस्र की है। उन दिनों में भी समाज में प्रशासक होते थे जो शासन चलाते थे। उन्हें फिराऊन कहा जाता था। फिराऊन अपने अधिकारियों द्वारा हर किसान के बारे में पूरी जानकारी रखते थे। किस किसान के पास कितनी जमीन है, कितने मवेशी हैं और कितने फलदार पेड़ हैं। किसान को अपनी उपज का एक हिस्सा सरकार को 'कर' के रूप में देना होता था। किसानों से छीना हुआ अनाज विशाल भंडारों में जमा होता था और इससे अधिकारियों, प्रहरी (पुलिस) सैनिकों आदि का वेतन चुकाया जाता था। यदि वे 'कर' जमा नहीं कर पाते थे तो प्रहरी उन्हें डंडो से पीटते थे।

ऐसा या इससे मिलता जुलता किस्सा तुममें से कईयों के साथ शायद कभी हुआ हो। एक ही कस्बे या शहर में साथ लगे घरों में कई ऐसे बच्चे होंगे जो अलग—अलग भाषाएं बोलते हैं। अगर हम पूरे देश में रहने वाले बच्चों की भाषाओं को जोड़ें तो आश्चर्य चकित रह जाएं। सैकड़ों अलग—अलग भाषाएं हैं। अगर हम यह भी जोड़ लें कि पास के जिले में रहने वाले चाचा जी की लड़की या मौसी का लड़का कुछ मायनों में हमसे अलग हिंदी बोलता है तो भाषाओं की संख्या कई गुना बढ़ जाएगी।

हम दोस्त बनाते हैं। लोगों को बताते हैं कि हम क्या सोच रहे हैं। कैसा महसूस कर रहे हैं। यह सब हम आपस में बात करके ही कर पाते हैं। बातचीत में हम शब्दों का प्रयोग करते हैं। और शब्द हमारी भाषा का एक हिस्सा हैं।

जन्म से ही हमारे होंठ, मुंह, जीभ और गले में वाक् तंतु होते हैं, पर हम बोल नहीं सकते। सिर्फ आवाजें निकाल सकते हैं। चोट लगने पर रो सकते हैं, चिल्ला सकते हैं जैसा कि जानवर भी कर सकते हैं। हमारी कोई भाषा नहीं होती। भाषा हमें सीखनी पड़ती है।

शुरू में हम बोलना सीखते हैं, औरों को देखकर, उनकी नकल करके, उनके द्वारा उत्पन्न आवाजों को सुनकर और संदर्भ से जोड़कर। इसमें हमारे नजदीक रहने वाले माता, पिता, बड़े भाई—बहिन तथा अन्य रिश्तेदारों की विशेष भूमिका होती है। शुरू में बहुत सरल आवाजें ही हम निकाल पाते हैं। और शायद इनका अर्थ भी नहीं जानते। ये आवाजें सामान्यतः दा, दा, मा, बा, बा आदि होती हैं। जो धीरे—धीरे दादा, मामा, बाबा, बन जाती हैं। इसमें संबंधित शब्द व उनका अर्थ भी समझ में आने लगता है। कई शब्दों के उच्चारण और बोल पाने के लिए हमें दांत चाहिए।

इसके अलावा बात करने के कई और तरीके हैं। इनमें शब्दों का उपयोग नहीं होता। बहरे लोग सुन नहीं सकते, इसलिए शब्दों को वे बोलने वाले के होंठों और उसके हाव भाव को देखते और पढ़ते हैं। इन्हीं के आधार पर समझते हैं कि क्या कहा जा रहा है। मानों उन्होंने शब्द सुने भले ही न हों, पर देख पाने का कौशल प्राप्त कर लिया हो।

कई कबीले (लोगों के ऐसे छोटे—छोटे समूह, जो एक साथ रहते हैं और जिनके आपस में गहरे संबंध होते हैं), जैसे अमेरिका के रेड इंडियन, धुंए के संकेतों का इस्तेमाल करते थे। कई और कबीले संदेश भेजने के लिए ढोलक की थाप का उपयोग करते थे और शायद आज भी करते हैं। ढोलक की थाप के माध्यम से ही कबीलों का आपस में संवाद भी होता है।

मानव ही एकमात्र प्राणी है जो भाषा का उपयोग करता है। पशु भी एक दूसरे से बात करते हैं पर शब्दों के बिना।

वे गंध से, चिल्लाकर या कुछ और गतिविधियों जैसे चलना या कूदना आदि से बात करते हैं। इनके लिए मुख्यतः ये संकेत एक दूसरे को खतरे से आगाह कराना, भूख डर या प्यार का अहसास कराने के साधन हैं।

आज से कई हजार साल पहले मानव भी बात नहीं कर सकता था। वह मात्र संकेत या खखारने से ही काम चलाता था। फिर उसने अपनी गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाने शुरू किए। इन चित्रों के माध्यम से वह अपने विचार दूसरों को बताता और अपनी कल्पनाएं व्यक्त करता था। ऐसे ही चित्रों से हमें पता चलता है कि आदि मानव बड़े—बड़े खूंखार जानवरों को भाले से मारता था। उसने पालतू पशुओं, मवेशी और घोड़ों के चित्र भी बनाए। अपने हथियारों की आकृतियां बनाई। इनमें तीर, कमान, भाला, आदि हैं जिनकी मदद से वह दुश्मनों से अपनी रक्षा करता था और शिकार मारता था। ऐसे ही चित्रों के माध्यम से वह अपने अनुभवों की पूरी कहानी अन्य लोगों को बताता था।

लेकिन चित्र बनाना जटिल काम है और इसमें बहुत समय लगता है। जैसे—जैसे बताने को ज्यादा बातें होने लगीं, मानव ने प्रतीकों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। हर वस्तु का पूरा चित्र बनाने की बजाए वह उसके लिए कोई प्रतीक इस्तेमाल करता था।

चीन और अरब देशों में लगभग चार हजार वर्ष पूर्व से ही लोगों ने इस प्रकार की चित्रयुक्त लिखावट का उपयोग करना शुरू कर दिया था। भारत में भी लगभग ;5000 साल पहले से ही इस तरह की लिखावट का उपयोग होने लगा था। इस प्रकार की लिखावट को हाइरोग्लाइफिक्स या चित्र लेखन कहते हैं।

चित्र लेखन को बाद में सरल किया गया और एक आसान लिपि उभरी। आवाज को छोटे टुकड़ों में बांट कर प्रत्येक टुकड़े के लिए "अक्षर" बनाए गए जो उस आवाज के प्रतीक मान लिए गए। इन विभिन्न अक्षरों को जोड़ने पर शब्द बन जाते। कुछ इस तरह ही भाषा का विकास हुआ। देश—विदेश के अलग—अलग हिस्सों में बसे लोगों ने अपनी—अपनी भाषा का विकास किया, जिनमें विभिन्न शब्द बनाए गए। पास—पास रहने वाले लोगों की भाषाएं एक दूसरे से प्रभावित होती रही हैं।



सिंधु घाटी की सभ्यता करीब 4,000 वर्ष पुरानी है। घाटी की खुदाई में इसके प्रमाण मिले हैं। प्राप्त वस्तुओं में लगभग 2,000 मोहरे हैं। ये मोहरें चीनी मिट्टी, हाथीदांत या शैलखड़ी की बनी हैं। इन पर पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मानव आकृतियां तथा लिपि संकेत हैं। किसी-किसी मोहर पर खड़ी रेखाएं भी मिलती हैं, जो शायद अंक संकेत हैं। इन अंक संकेतों तथा लिपि को पढ़ने की कोशिश की जा रही है, पर अभी इसमें सफलता नहीं मिली है।

लेखन कला 4,000 वर्ष पहले चीन में विकसित हुई। पहले वहां चित्रलिपि का इस्तेमाल होता था। इस चित्रलिपि में शब्दों के लिए अलग-अलग चिंह थे, जैसे कि, * का अर्थ है वृक्ष, ** का अर्थ है वन और *** का अर्थ है घना वन। प्राचीन समय में चीनी लोग बांस की पट्टियां पर लिखते थे। यात्रा करते समय लोग बांस की ऐसी पुस्तकें अपने साथ रखते थे। कहा जाता है कि कागज का आविष्कार, और कई साल बाद छपाई मशीन का आविष्कार भी चीन में ही हुआ।

कभी एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में स्वीकार कर लिए जाते हैं। कभी कहने का ढंग व शब्दों की व्यवस्था का आदान —प्रदान होता है। और कभी—कभी भाषाएं मिलकर एक नई भाषा बना लेती है। ऐसे परिवर्तन सिर्फ पास—पास रहने से ही नहीं, एक दूसरे के संपर्क में आने से भी हो सकते हैं।

भाषा के विकास में स्थानीय परिवेश, सामाजिक परिस्थितियों और उनसे उभरती मानव समूह की आवश्यकताओं का भी हाथ है। उपरोक्त कारणों की वजह से ही हमें अलग—अलग भाषाएं जैसे हिंदी, अंग्रेजी, तमिल और इटालियन आदि मिली हैं। साथ ही प्रत्येक भाषा के संदर्भ में बघेलखंडी, बुंदेलखंडी, मालवी, निमाड़ी जैसी बोलियां पहचानी जा सकी हैं।

नीचे: बहुत कोशिशों के बाद कुछ प्राचीन लिपियों के अर्थ समझ आने लगे हैं। यह चित्र प्राचीन मिस्र की चित्रलिपि का है। यह एक अभिलेख है और इसमें टोलमी (एक प्राचीन इतिहासकार) और क्लिओपिट्रा (मिस्र की फिराउनी) के नाम हैं। दोनों में 'ट' के लिए अलग-अलग प्रतीक इस्तेमाल किए गए हैं। क्लिओपिट्रा के नाम में अंतिम दो प्रतीक स्त्रीलिंग के सूचक हैं।



शब्द क्या है?

''चटपटा'' कितना चटपटा शब्द है। मैं उसे चख तो नहीं पाती। पर चटपटा शब्द सुनकर या पढ़कर चटपटी चीज का स्वाद याद आ जाता है।

''छुक...छुक...छुक...'' आवाज रेलगाड़ी की। रेलगाड़ी हमारे सामने न भी हो, पर शब्द पढ़ते ही उसकी आवाज कानों में गूंजने लगती है छुक...छुक...छुक...।

जब हम कोई शब्द पढ़ते हैं तो हम उसे छूते हैं, चखते हैं, महसूस करते हैं, सूंघते हैं, सुनते हैं। जबकि शब्द तो सिर्फ शब्द ही हैं।

शब्द सिर्फ प्रतीक हैं। और अक्षर भी प्रतीक हैं। और—छोटे प्रतीकों यानी अक्षरों को जोड़कर हम एक बड़ा प्रतीक बना लेते हैं, यानी शब्द। जो वैसे तो कुछ भी नहीं है, फिर भी हमारे लिए कितने मायने रखते हैं।

शब्द मुझे बताते हैं कि तुम क्या सोच रहे हो, क्या महसूस कर रहे हो। वे तुम्हें बताते हैं कि मैं क्या सोच रही हूं क्या महसूस कर रही हूं।

शब्द लोगों को एक दूसरे से क्या करने में मदद करते हैं। एक दूसरे को समझने में मदद करते हैं। अपने मन की बात आपस में बांटने में मदद करते हैं।

शब्दों से हमारे मन में चित्र सा बन जाता है असली चीजों का, बातों का। जबकि शब्द असल में, अपने आप में, कुछ भी नहीं हैं।

रश्मि पालीवाल

शब्द क्या है
शब्द हवा है
या स्याही में
डूबा चींटा है

शब्द रेला है
शब्द मेला है
या खड़ा भीड़ में
कोई अकेला है

शब्द खुश है
शब्द गुस्सा है
या चाशनी में
डूबा पेठा है

शब्द दौड़ा है
शब्द छोड़ा है
या छंनू मियां
का घोड़ा है

शब्द बड़ा है
शब्द खड़ा है
या भरा अक्षरों
से कोई घड़ा है

शब्द गंदा है
शब्द अच्छा है
या कोई चंचल
बच्चा है

शब्द पंडित है
शब्द पठान है
या गांव का
कोई किसान है

शब्द जमा है
शब्द घटा है
या बातों का
भाग गुणा है

शब्द मिल है
शब्द मकान है
या मोटूमल की
कोई दुकान है

शब्द मशहूर है
शब्द मजबूर है
या हमसा तुमसा
कोई मजदूर है

शब्द चकमक है
शब्द बमचक है
या केवल अपनी
तुपनी बकबक है

राजेश उत्साही

अपनी प्रयोगशाला

तुम बताओ

गांव में 'दुनिया की सैर' नामक फिल्म लगी थी। रमेश उसको तीन बार देख चुका था। अब उसके सपनों में न केवल जापान, चीन, रूस, ब्राजील, न्यूयार्क, फ्रांस के दृश्य आ रहे थे। बल्कि वह चांद-सूरज तक जाने की कल्पना करने लगा था।

इच्छा पैदा होने के साथ ही उसने इन विषयों पर खगोल शास्त्र की सरल किताबें पढ़ना शुरू कर दिया। इसी पढ़ाई अभियान में उसके हाथ में एक किताब आई, जिसमें चांद तक पहुंचने के लिए एक विचित्र मशीन का वर्णन किया गया था।

किताब में दिए विमान की कार्य प्रणाली कुछ इस तरह थी। चांद का सफर करने वाले यात्री ने लोहे की हल्की गाड़ी बनवा ली। उस गाड़ी में बैठकर यात्री ने हाथ में चुंबक का एक गोला लिया। उसने चुंबकीय गोले को ऊपर उछाला। ऐसा करने से गाड़ी (जो लोहे से बनी थी) चुंबकीय बल से आकर्षित होकर गोले के पास पहुंच गई (तुम जानते ही हो कि चुंबक लोहे को आकर्षित करता है)। यात्री ने गोले को पकड़कर फिर से ऊपर फेंक दिया।

ऐसा करते-करते गाड़ी चांद के करीब पहुंच गई। अब गाड़ी (यात्री सहित) तेजी से चांद की ओर गिरने लगी। इससे खतरा हुआ कि गाड़ी (यात्री सहित) चांद पर गिरकर चकनाचूर हो जाएगी।

तब यात्री चुंबक के गोले को उल्टी दिशा में उछालने लगा। अब वह चांद से उल्टी दिशा में गोला इस तरह उछालने लगा कि गाड़ी के गिरने की रफ्तार एक दम धीमी हो गई। इस प्रकार यात्री धीरे-धीरे चांद की सतह पर उतर गया।

अब बन गया काम, रमेश ने सोचा और एकदम उत्तेजित हो गया। उसे ऐसी मशीन प्रयोग में लाने का जुनून सवार हो गया।

क्या तुम बता सकते हो कि ऐसी मशीन बनाना संभव है या नहीं। कारण सहित रमेश को समझाओ।

करके देखो

एक प्लास्टिक की कीप लो। उसमें थोड़ी सी रुई भर लो। (जैसे चित्र में दिखाया गया है)। रुई के ऊपर 50 ग्राम मिट्टी तौलकर डालो।

अब एक नपनाघट में पानी भरो। नपनाघट के स्केल (पैमाने) से पानी का कुल आयतन पता कर लो।



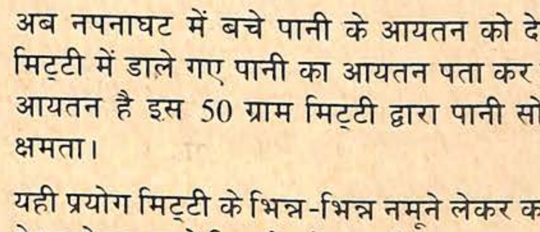
नपनाघट के पानी से एक ड्रापर भर लो। ड्रापर की मदद से बूंद-बूंद पानी रुई की मिट्टी पर डालो। बूंदें तब तक डालते रहो, जब तक मिट्टी पूरी तरह गीली न हो जाए, और पानी की एक-दो बूंदें कीप में से टपकने न लगें।

अब नपनाघट में बचे पानी के आयतन को देखो और मिट्टी में डाले गए पानी का आयतन पता कर लो। यह आयतन है इस 50 ग्राम मिट्टी द्वारा पानी सोखने की क्षमता।

यही प्रयोग मिट्टी के भिन्न-भिन्न नमूने लेकर करो। तुम ये नमूने सड़क के किनारे, खेत, नदी तट, तालाब, पहाड़, जंगल या आंगन आदि से इकट्ठा कर सकते हो।

क्या तुम अपने अवलोकनों के आधार पर एक स्तंभालेख बना सकते हो? इन अवलोकनों के आधार पर क्या तुम बता सकते हो कि कौन-सी मिट्टी फसल उगाने के लिए अच्छी है और क्यों?

ऐसा क्यों?



जग्गू ने एक कंघी ली। कंघी को उसने अपने बालों में खूब रगड़ा। फिर वह कंघी को नल से निकलती पानी की पतली धार के पास लाया। उसने देखा कि पानी की धार कंघी की ओर मुड़ जाती है। उसे लगा, जैसे चुंबक लोहे को आकर्षित करके खींचता है, वैसे ही कंघी अपनी चुंबकीय शक्ति से पानी को खींच रही है।

लेकिन तुम जानते हो कि प्लास्टिक की कंघी चुंबक नहीं हो सकती है। तुम यह भी जानते हो कि पानी लोहे की तरह चुंबकीय बल से आकर्षित नहीं होता है।

तो फिर यह आकर्षण कैसे पैदा हुआ? तुम समझा सकते हो? इस तरह के आकर्षण के कुछ और उदाहरण तुम दे सकते हो?



■ खड़क सिंह राजस्थान के रेगिस्तान के किनारे रहता है।एक दिन उसने अपने चाचा के गांव जाने का निर्णय किया। रास्ता रेगिस्तान से होकर ही निकलता था। इत्तफाक से उसको ट्रक पर बैठकर चलने का मौका मिल गया। एक घंटे तक उसने ट्रक पर सवारी की। इस बीच चाचा के गांव का आधा रास्ता तय हो गया। तुम जानते हो कि ट्रक बहुत तेज चलता है। यह ट्रक खड़क सिंह की पैदल गति से दस गुना तेज चलता था।

अब आधा रास्ता बचा था। गरमी बहुत तेज थी। पैदल चलना असंभव था। एक बूढ़े ऊंट के अलावा वहां सवारी का और कोई साधन नहीं था। खड़क सिंह ऊंट पर बैठकर चाचा के गांव पहुंचा। इसमें उसकी पैदल गति से दुगना समय लगा।

घर लौटते समय खड़क सिंह पूरे रास्ते पैदल आया।

अब तुम बताओ, क्या उसको जाने में ज्यादा समय लगा या घर लौटने में? यह भी बताओ कि उसको जाने में और आने में कितना समय लगा होगा।

■ राजेश और रीता एक ही तरह के स्वेटर पहने हैं। राजेश के बाएं ओर शीला खड़ी है और दाएं ओर ललिता। सलीम के दाएं नीना खड़ी है और बाएं फरीदा। तुम बताओ, इस चित्र में कौन कहां खड़ा है।



अक्टूबर की पहेली

मान लो कि तुम एक वैज्ञानिक हो जो नई-नई चीजों और मशीनों का अविष्कार करता है। और मान लो कि नई मशीनें बनाने के लिए तुम्हारे पास सब कुछ साधन मौजूद हैं।

अब तुम से कहा जाता है कि कोई ऐसी काल्पनिक मशीन या खिलौने का अविष्कार करो जो बिलकुल ही अद्‌भुत हो और जो अभी तक नहीं बनाया गया हो। मशीन हो तो ऐसी, जिस से बहुत अधिक लाभ हो। खिलौना हो तो ऐसा, जिस से खेलने में बहुत मजा आए।

इस मशीन या खिलौने का वर्णन चित्र के साथ लिख कर हमें भेजो। यह जरूर बताओ कि मशीन क्या करती है, उसके कौन से कल-पुर्जे हैं, और उससे क्या-क्या लाभ हैं।

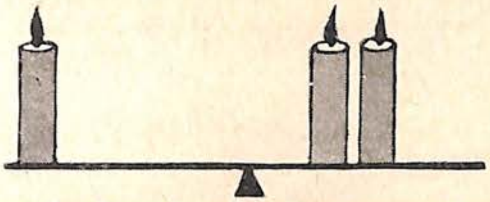
जो मशीनें या खिलौने हमें बहुत पसंद आएंगे, उनका वर्णन हम अविष्कारक के नाम के साथ छापेंगे।

■ **तुम बाजार से एक किलो शक्कर खरीद कर लाए** परंतु घर जा कर पाया कि वह वास्तव में एक किलो से कम थी। तुमने खरीदते वक्त ध्यान से देखा था कि दुकानदार की तराजू शक्कर तौलने से पहले और शक्कर तौलने के बाद दोनों बार संतुलित थी। दुकानदार के बांट भी बिलकुल सही थे। और उसने तौलते समय डंडी भी नहीं मारी थी। उसके तराजू की क्या विशेषता थी जिससे ऐसा हुआ?

■ यहां कुछ रेखाएं दिखाई गई हैं। शायद ये बादलों की आकृति दर्शातीं हैं।

तुम कल्पना करके बताओ कि ये रेखाएं और किन-किन वस्तुओं या चित्रों का हिस्सा हो सकतीं हैं। ऐसी 5 वस्तुओं/चित्रों के नाम सुझाओ।

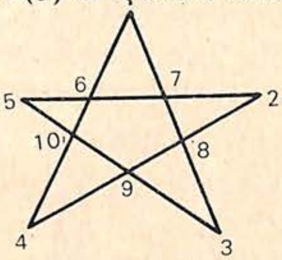




■ एक पैमाने पर तीन मोमबत्तियां लगाकर पैमाने को एक टेक पर संतुलित किया गया है। मोमबत्तियों के जलने की गति समान है।

आधा घंटे बाद पैमाना किस ओर झुकेगा अगर–

i) तीनों मोमबत्तियों को एक साथ जला दिया जाए।
ii) केवल (1) और (3) को एक साथ जलाया जाए।



■ चित्र में दिखाए अनुसार जमीन पर यह सितारा बनाओ।इस पर दस बिंदु हैं। अब नौ छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़े लो। किसी भी बिंदु से शुरू करके सीधी रेखा में एक बिंदु छोड़कर अगले बिंदु पर पत्थर रखो। (जैसे अगर 1 से शुरू करते हैं तो 7 को छोड़कर 8 पर या 6 को छोड़कर 10 पर पत्थर रखो)। इस तरह तुम्हें 10 से 9 बिंदुओं पर अपने पत्थर रखना है। परन्तु ध्यान रखना है कि जिस बिंदु पर पत्थर रखा जा चुका है, वहां से शुरू नहीं करना है। चलो, झटपट शुरू हो जाओ।



■ खंडहरों में से पुरातत्व विज्ञानी ने एक मिट्टी की तख्ती खोज निकाली। उस पर कुछ लिखा था पर उसका अर्थ समझाना आसान नहीं था, क्योंकि भाषा कुछ अजीब ढंग की थी। कुछ इस प्रकार के संकेत साथ में बने थे:

क्या तुम बता सकते हो कि तख्ती पर क्या लिखा है?



है =

है 1

है 5

है 7

■ इस अजायबघर में तुम्हें जानवर ढूंढने हैं। तुम दाएं से बाएं, बाएं से दाएं, ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर, अक्षर जोड़-जोड़ कर जानवरों के नाम ढूंढ सकते हो। चार उदाहरण तुम्हारी मदद के लिए दिए गए हैं। अब तुम और जानवर खोज निकालो।

या	बि	रो	म	वा	स	ना	ट	बि	ल्ट	इ	डी	म	लो	न
त्यो	ल्ली	वो	नि	शे	र	मे	नौ	दां	ग़्या	र	ह	मु	नि	सो
भी	प्रि	सि	पी	या	न्यू	या	ट	न	धा	बु	लै	को	स्यो	हि
ए	जो	भी	हो	तो	मो	री	सा	ने	ग	च	क	म	क	तें
क	र	घ	मा	नि	क	ता	ला	ब	क	री	रा	जा	औ	दु
शा	गो	र	ख	मी	हि	फै	म	वा	ली	रा	म	र	रं	आ
ए	क	ल	व्य	यो	र	ला	ल	बु	झ	क्क	ड	घी	क	इ
ब	क्यां	य	ही	त्ता	न	मे	के	नि	क	आ	डा	घो	यू	स
ल्ब	रु	घ	है	क	च	क	म	क	क	घु	म	क्क	ड	त्यू
बू	न्यू	ब्रा	जिं	द	है	गा	य	ल	क	र	फ्यू	र	व्यू	ला
गि	गृ	गी	ब	न	दू	क	वै	कु	हा	लो	ह	द	मो	रौ
ल	वा	हा	चू	फ्रै	कै	य	दी	ठो	थी	ग	म	बं	रि	के
हं	थ्रू	का	द्र	कौ	ग्लो	गा	का	या	खा	क्ले	ना	स्पि	त्ता	कु
री	स	व	ली	ग	म	ल	या	गी	डि	भे	च	क	म	क
डो	नो	ऊं	ट	ए	ब्लू	नी	टृ	थे	में	भैं	स	मि	स्ट	र

कविता का पन्ना



ना भई ना

खाओ तो भी पछताओ
छोड़ो तो भी पछताओ
लगा दिया मिट्टी के मोल
आ जाओ भई आ जाओ।

"ना भई ना, ना भई ना"
"हां भई हां, हां भई हां"
ऐसी गाजर मिले कहां
एक रूपे में पांच किलो
लगा दिया भई आ जाओ।

"ना भई ना, ना भई ना"
"हां भई हां, हां भई हां"

ककड़ी ले लो नरम-नरम
हलवा खा लो गरम-गरम
इसके आगे नारंगी
भी लगती फीकी-फीकी
दे जाओ मिट्टी का दाम
ले जाओ किशमिश-बादाम
मेवा खाओ, आ जाओ।
फुरसत से फिर पछताओ

"ना भई ना, ना भई ना।"
"हां भई हां, हां भई हां।"

रमेशचंद्र शाह



सयाना उल्लू

पेड़ पर बैठा उल्लू एक सयाना
अधिक था सुनता कम उसका बोलना
कम था बोलता अधिक उसका सुनना
इसी गुण को है हमें भी गुनना

लाल बुझक्कड़

वह सोचता भी है...



कप्तान

माना कि तुम्हारा टैंक
बहुत ताकतवर है
वह आदमियों को रौंद सकता है
हरे-भरे जंगल जला सकता है
पर उसमें एक ही कमी है
उसे एक ड्राइवर चाहिए।



कप्तान

माना कि तुम्हारा बांबर जहाज
बहुत बलशाली है
उसकी चाल तूफान को भी
मात करती है
और वह हाथी बराबर का
वजन उठा सकता है
पर उसमें भी एक कमजोरी है
उसे एक मिस्त्री की जरूरत है।



कप्तान

आदमी बहुत काम की चीज है
वह उड़ सकता है
और बंदूक से
गोली भी चला सकता है
पर उसमें एक ही गड़बड़ है
वह सोचता भी है।

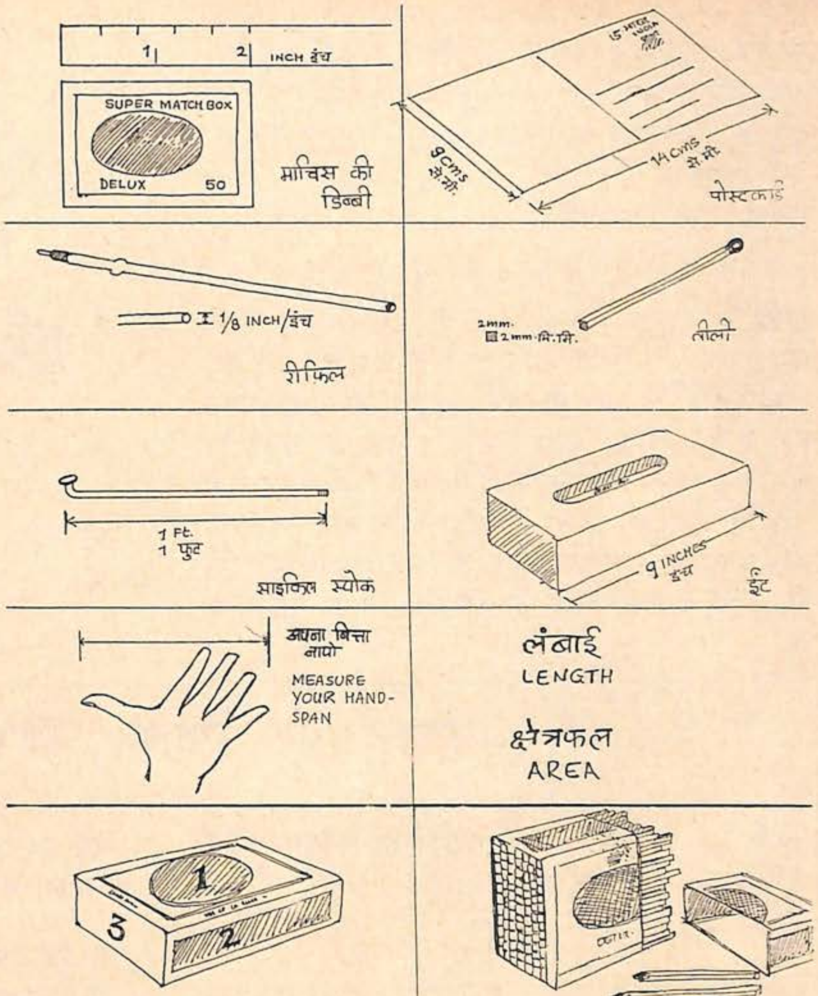
बर्टोल्ड ब्रेख्त
(अंग्रेजी से अनूदित)

बिना स्केल के

गिल्ली-डंडे के खेल में गुच्चक से गिल्ली की दूरी तुम कैसे नापते हो? गांव में कुएं की गहराई कैसे मालूम करते हैं? दूधवाला दूध कैसे नापता है? किराने की दूकान में दुकानदार वस्तुएं कैसे तौलता है, और लोग समय के बारे में कैसे पता लगाते हैं?

लंबाई ओर आयतन नापते समय, मापने और वजन तौलने के मौके हमारे दैनिक जीवन में रोज ही कई बार आते हैं। ऐसी और कई चीजें और क्रियाएं हैं जिनको कभी-न-कभी नापना पड़ता है-ताप, गति, प्रकाश कोण आदि।

एक काम करो। नापने की इकाईयों की एक सूची बनाओ। इसमें हर तरह की इकाईयों को शामिल करो, चाहे वह तुम्हारे गांव की हो या कोई विदेशी इकाई। इससे दो बातें उभरेंगी। पहली यह कि नापने/तौलने की जरूरत कितने ही कामों में पड़ती है। दूसरी यह कि एक ही चीज नापने के लिए कितनी इकाईयां उपलब्ध हो सकती हैं। दुनिया के हर कोने में लोगों ने अलग-अलग अपनी इकाईयां बनाई हैं। इन इकाईयों के बारे में फिर कभी बताएंगे। अभी नापने के बारे में कुछ और बातें करें।



नापने की इकाई बनाओ

तुम खुद नापने/तौलने की इकाईयां बना सकते हो। तुम्हारे आसपास ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो नापने के काम में आ सकती हैं। यदि तुम्हें लंबाई - चौड़ाई नापना हो, तो तुम कुछ ऐसी चीजें चुन सकते हो जिनकी लंबाई और चौड़ाई निश्चित हो। कुछ ऐसे उदाहरण ये रहे—

पोस्टकार्ड: एक भारतीय पोस्टकार्ड हमेशा 14 सेंटीमीटर लंबा और 9 सेंटीमीटर चौड़ा होता है। इसकी लंबाई 6 इंच से कुछ ही (1 सेंटीमीटर) कम है।

सिक्के: सिक्कों की भी निश्चित गोलाई होती है। इनके आकार शासन द्वारा निश्चित मानकों के तहत तय किए जाते हैं। 50 पैसे के सिक्के के वृत का व्यास 2.5 सेंटीमीटर (1 इंच) के आसपास होता है। इसी तरह २५ पैसे वाले सिक्के के वृत का व्यास 2 सेंटीमीटर है। दूसरे सिक्कों का व्यास तुम खुद पता करो।

रीफिल: बालपेन की रीफिल की लंबाई भी निश्चित होती है। रीफिल का व्यास लगभग 1/8 इंच (1/3 सेंटीमीटर) होता है।

स्पोक: साइकिल के स्पोक (तान) की लंबाई आमतौर पर 1 फुट (30 सेंटीमीटर) होती है।

ईंट: एक ईंट 9 इंच (22.5 सेंटीमीटर) लंबी होती है उसकी चौड़ाई भी निश्चित होती है।

माचिस की तीली: माचिस की हर तीली वर्गाकार होती है। चारों सतहों की चौड़ाई 2 मिलीमीटर होती है।

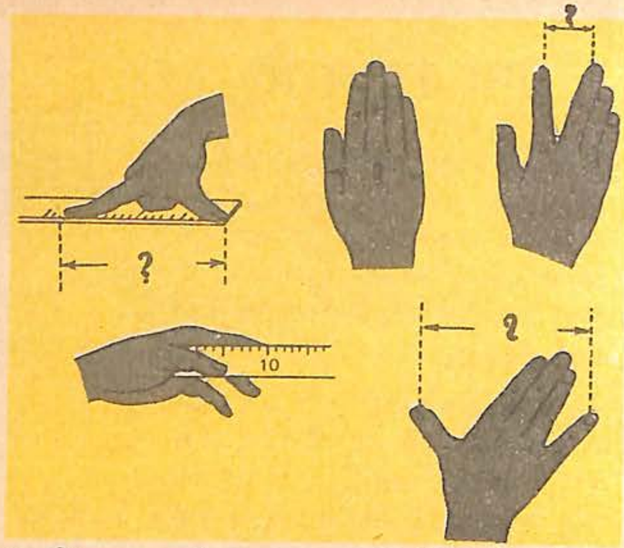
कदमों से नापना: तुम अपनी अभ्यास पुस्तिका या मेज की लंबाई/चौड़ाई पोस्टकार्ड या माचिस की डिब्बी से आसानी से निकाल सकते हो। पर मान लो तुम्हें अपने घर से स्कूल की दूरी नापना हो। क्या करोगे? सब से सरल तरीका है-कदमों से। यह एक ऐसा तरीका है जो लोग प्राचीन काल से इस्तेमाल करते आए हैं।

पर इसमें कुछ समस्याएं हैं। क्या तुम्हारे सब कदमों की लंबाई एक जैसी ही होती है, या कम-ज्यादा? यदि तुम किसी दूरी को कदमों से नापना चाहोगे तो सबसे पहले तुम्हें अपने एक कदम की औसत लंबाई पता करनी

होगी। यह बहुत सरल है। पहले समतल भूमि पर पैमाने या टेप (फीते) की मदद से 20 मीटर की दूरी नाप लो। दोनों ओर निशान बना लो। अब साधारण कदमों से इस दूरी को तय करो। जितने कदम तुम चले, 20 मीटर में उस संख्या का भाग दे दो। बस, एक कदम की औसत लंबाई निकल आएगी।

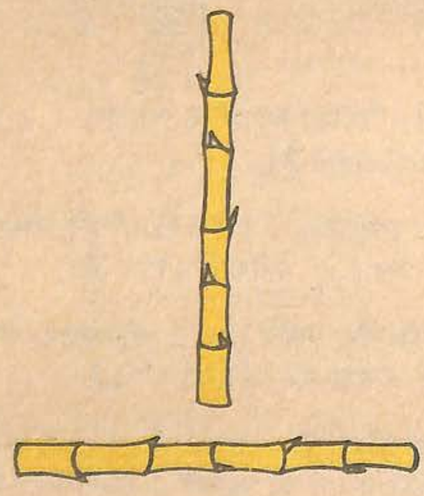
अब तुम अपने घर से स्कूल तक की दूरी नापो।

हाथों से नापना: गिल्ली-डंडा या अंटी (कंचा) खेलते समय कई बार तुम्हें अपने हाथों से नापना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लोग लंबाइयां 'हाथों' से नापते हैं। जी हां, तुम्हारा हाथ एक प्रकार का पैमाना ही है। चलो देखें कितनी नापें हाथों में छिपी हैं। सबसे पहली है तुम्हारी एक अंगुली की चौड़ाई। फिर चार अंगुलियों की। इसके अलावा तुम अपने बित्ते का नाप भी ले सकते हो। फिर है एक 'हाथ' की लंबाई—अपनी कोहनी से अंगुली तक। इससे बड़ा नाप अपने कंधे से अंगुली तक का है।

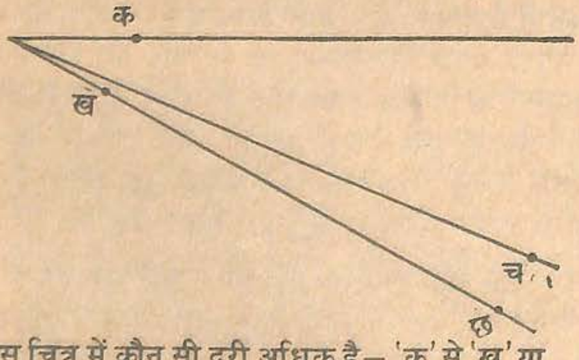


अनुमान पर कितना विश्वास करें?

नीचे दिए चित्रों को ध्यान से देखो। फिर अनुमान से नीचे पूछे प्रश्नों का उत्तर दो।



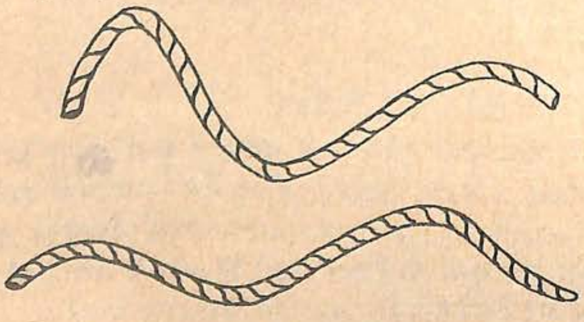
दोनों बांसों में कौन सा ज्यादा लंबा है?



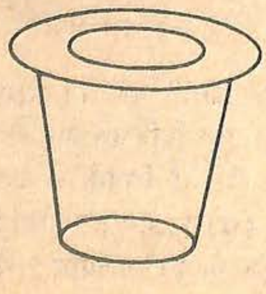
इस चित्र में कौन सी दूरी अधिक है— 'क' से 'ख' या 'च' से 'छ'?

अब इन लंबाईयों और दूरियों को स्केल से नापो। तुम्हारा अंदाज सही निकला या गलत?

यह हुई बात सरल, सीधी रेखाओं की। जब वस्तुएं सीधी न हो तब केवल अनुमान से लंबाई बताना और भी कठिन हो जाता है।

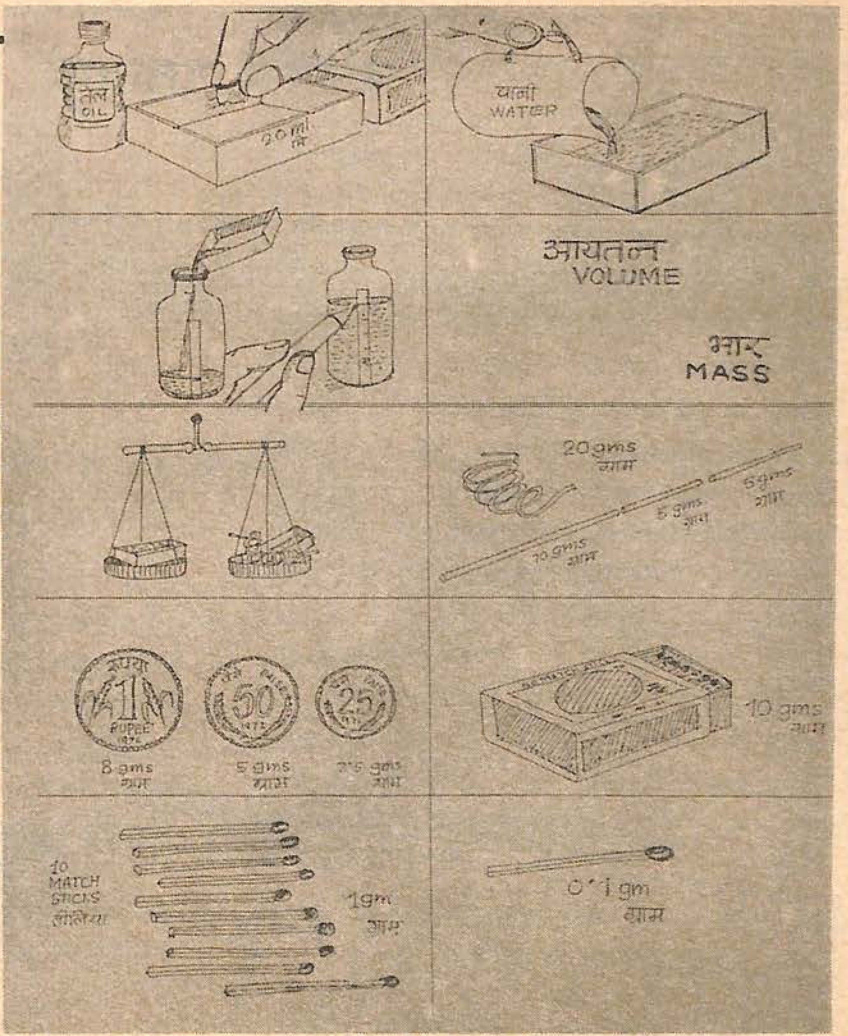


इन रस्सियों में से कौन सी रस्सी अधिक लंबी है? इन की लंबाई तुम कैसे नापोगे?



इस चित्र में कौन सा वृत बड़ा है - ऊपर (अंदर) वाला या नीचे वाला?

माचिस की डिब्बी



माचिस की डिब्बी आसानी से प्राप्त हो जाने वाली चीज है। यह एक ऐसी चीज है जिसका उपयोग हर कोई करता है। हमारे रोज के जीवन में माचिस इतनी उपयोगी है कि कारखानों में रोजाना लाखों-करोड़ों माचिस की डिब्बियां तैयार की जाती हैं। बाजार में पहुंचते ही इनकी जल्दी खपत भी हो जाती है। तुम देख सकते हो कि अधिकतर माचिस की डिब्बियां एक निश्चित आकार (लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई) की होती हैं।

आओ, साधारण माचिस की डिब्बी के बारे में कुछ और बातें पता करें।

लंबाई: एक अच्छी माचिस की डिब्बी की लंबाई 5 सेंटीमीटर (2 इंच) होती है। यदि हम 6 डिब्बियां एक साथ रखते हैं तो इनकी कुल लंबाई 30 सेंटीमीटर या एक फुट होगी।

क्षेत्रफल: माचिस की डिब्बी की 6 सतह होती हैं। इनमें से लेबल वाली सतह (1) और नीचे की सतह (2) बराबर हैं और सबसे बड़ी हैं। मसाले वाली दोनों सतह (3.4) भी बराबर होती हैं। सब से छोटी सतह वह है जिस को खींचकर हम सीक निकालते हैं (5.6)।

अब इन सतहों को फिर से देखो। सतह, 1.2 और 3.4 की लंबाई बराबर है। सतह 1.2 की चौड़ाई सतह 5.6 की लंबाई के बराबर है। सतह 3.4 और सतह 5,6 की चौड़ाई बराबर है।

तुम तीनों सतहों के क्षेत्रफल निकालो। जानते हो न, क्षेत्रफल कैसे निकाला जाता है। पहले लंबाई और चौड़ाई नापो और दोनों संख्याओं का गुणा कर लो। याद रखना की क्षेत्रफल को वर्ग इकाई में लिखना है।

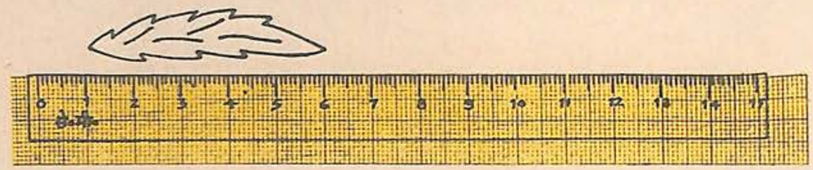
तीली से क्षेत्रफल निकालना: छोटी चीजों का क्षेत्रफल निकालने का भी तरीका है। मान लो तुम्हें माचिस की डिब्बी का क्षेत्रफल निकालना हो और तुम्हारे पास स्केल न हो। इस स्थिति में तुम क्या कर सकते हो? तीलियों की मदद क्यों नहीं लेते तुम तीलियों को उस सतह पर जमाओ जिसका क्षेत्रफल निकालना हो। तुम्हें मालूम है कि एक तीली का क्षेत्रफल 2x2=4 वर्ग मिलीमीटर है। अब तुम तीलियों की कुल संख्या जोड़कर माचिस की सतह का क्षेत्रफल निकाल सकते हो।

आयतन: पहले एक काम करो। रुई के एक टुकड़े को तेल में डुबाओ। इसे डिब्बी के ड्रावर (अंदर का खोखा) पर रगड़ लो। अब ड्रावर को सूखने दो। इस से ड्रावर वाटर प्रूफ (जल प्रतिरोधक) हो जाएगा। इस ड्रावर को यदि पानी से भर दिया जाय तो इसमें लगभग 20 मिलीमीटर पानी रहता है। इस ड्रावर से तुम किसी भी द्रव को 20 मिलीलीटर नाप सकते हो।

करके देखो: माचिस की डिबिया की मदद से अपनी अभ्यास पुस्तिका के कवर का क्षेत्रफल पता करो। अपने पैमाने की ऊपरी सतह का क्षेत्रफल निकालो। अपनी हथेली और पंजे का क्षेत्रफल पता करो यदि एक डिबिया की मदद से क्षेत्रफल निकालना मुश्किल हो, तो और डिब्बियां इस्तेमाल कर सकते हो।

तुम बताओ: क्या तम बिना खोले बता सकते हो कि एक भरी हुई माचिस की डिब्बी में कितनी तील्यियां हो सकती हैं?

नापने में गलतियां

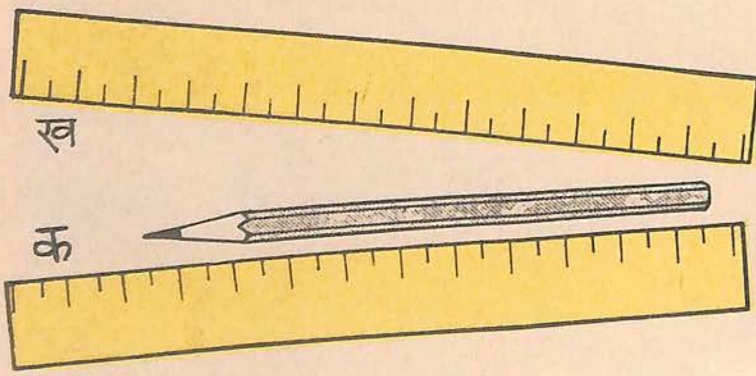


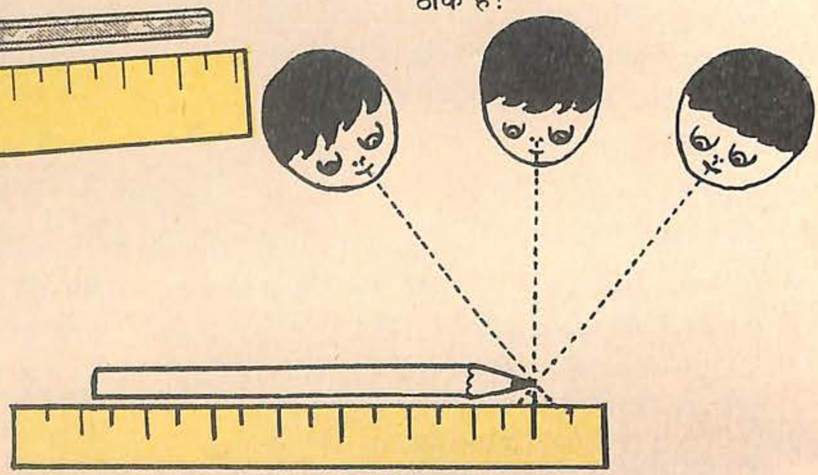
कल्लू ने पैमाने से ब्लेड की लंबाई 4.2 सेंटीमीटर और कील की लंबाई 3.2 सेंटीमीटर नापी। उसने क्या गलती की?

श्याम ने एक पत्ती को नापा। उसने उसकी लंबाई 6 सेंटीमीटर लिखी। उसने नापने में क्या गलती की? पत्ती का सही नाप क्या है?



यहां पैमाने के साथ सटाकर रखी पेंसिल को तीन अलग-अलग जगहों से देखा जा रहा है। सही नाप पाने के लिए कौन सी जगह ठीक है?





यहां एक ही पेंसिल को दो बार नापा जा रहा है। पेंसिल की लंबाई मालूम करने के लिए कौन सा पैमाना सही ढंग से रखा गया है?

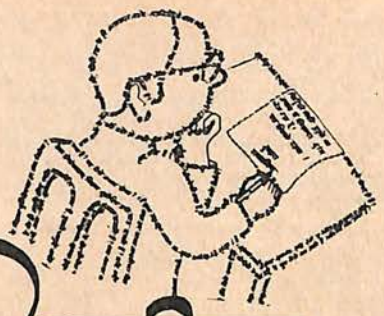
नपनाघट बनाओ: माचिस के ड्रावर की मदद से तुम एक नपनाघट बना सकते हो। इसके लिए एक कांच की बोतल लो। बोतल की लंबाई में एक कागज की पट्टी चिपका दो। अब माचिस के ड्रावर से 20 मिलीमीटर पानी बोतल में डाल दो। पानी की सतह का निशान कागज की पट्टी पर बना लो। यह निशान 20 मिलीलीटर का नाप है। ऐसे ही तुम 40, 60,. 80, 100 मिलीमीटर के निशान बना सकते हो।

यदि तुम्हें बड़े नपनाघट की जरूरत हो तो तुम उसे छोटे नपनाघट से बना सकते हो। एक बाल्टी या बडे बर्तन में दस बोलत पानी डालने से तुम एक लीटर का निशान बना सकते हो। वैसे ही 10. 15. 20. लीटर का निशान बना सकते हो।

वजन: तुम खुद अपने तराजू और बांट बना सकते हो। तराजू के पलड़ों के लिए तुम चौड़े पत्ते या पॉलिश की डिब्बियों के ढक्कन का उपयोग कर सकते हो। दो ढक्कन धागे की मदद से एक लकड़ी की डंडी के दोनों सिरों से लटका लो। लकड़ी पर बांधते समय ध्यान दो कि धागे की लंबाई समान हो। एक अच्छी और सही तराजू वह है जिसे डंडी के मध्य से लटकाने पर दोनों पलड़े समतल हों, ऊपर नीचे नहीं।

करके देखो: एक माचिस की डिब्बी की मदद से तुम्हारे कंपास बाक्स का आयतन निकालो। आयतन निकालने के दो तरीके हो सकते हैं। तुम खुद सोचकर ये तरीके सुझाओ।

शेष पृष्ठ ३९ पर



सवालीराम

सांप अपनी खाल (केंचुली) क्यों और कैसे बदलता है?

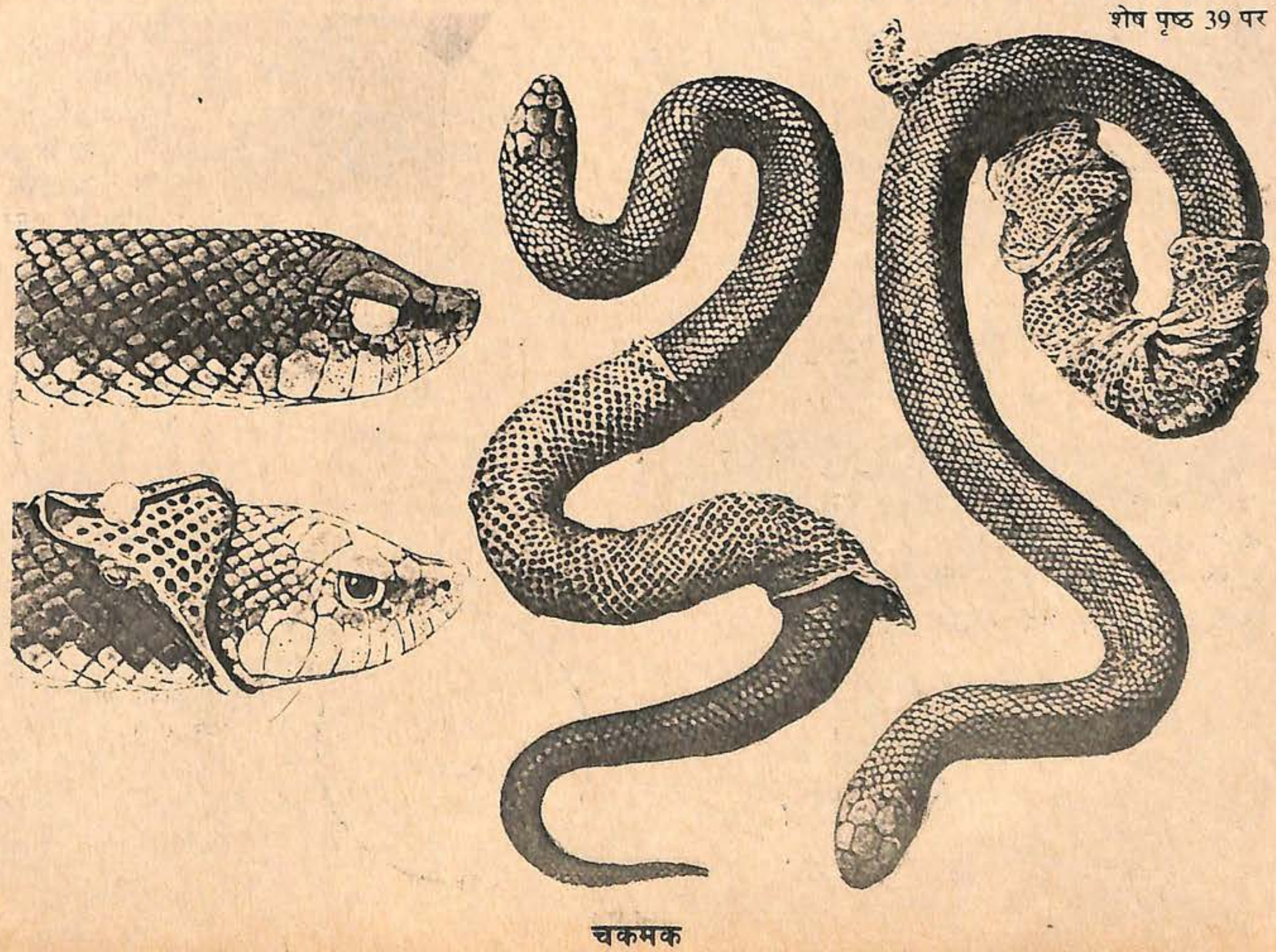
जीव-जगत में ऐसे कई प्राणी हैं जो अपने 'कपड़े' (खाल) हर साल, या साल में एक-दो बार बदलते हैं। जैसे तुम गंदे कपड़े बदलकर साफ कपड़े पहनते हो। तुम जानते ही हो अन्य प्राणी कपड़े नहीं पहनते। तब वे कैसे 'कपड़े' बदलते हैं? वे अपने शरीर के कुछ खास अंगों को बदलते हैं। जैसे पतझर के समय पेड़ अपनी पुरानी पत्तियां गिराते हैं और फिर नई पत्तियां उग आती हैं। यह क्रिया पेड़ों के जीवन चक्र से जुड़ी है। कुछ जानवर अपने बालों को झाड़ों पर रगड़कर गिरा देते हैं ताकि नए बाल उग आएं। कई पक्षी अपने परों को साल में एक-दो बार गिरा कर नए पर उगाते हैं। पुराने पर उड़ने में बाधा डालते हैं। इसलिए नए पर उगाना जरूरी हो जाता है।

सांप भी अपने शरीर की पूरी खाल बदलता है और नई खाल पहनता है। रेंगते-रेंगते सांप की खाल छिल जाती है और बहुत ज्यादा सख्त हो जाती है। हालांकि, खाल का सख्त होना जरूरी है। नहीं तो रेंगने में दिक्कत होती है। लेकिन, बहुत ज्यादा सख्त खाल सांप की अन्य जैविक प्रक्रियाओं में बाधा डालने लगती है। सांप की चमड़ी की कोशिकाओं में एक विशेष प्रोटीन-युक्त पदार्थ होता है जो खाल को सख्त बनाता है।

खाल बदलने में काफी समय लगता है। ऐसा नहीं कि कपड़ा उतार लिया और नया कपड़ा तुरंत पहन लिया। नए 'कपड़े' बनने में समय लगता है। हर प्राणी की त्वचा (चमड़ी) में निरंतर नई कोशिकाएं बनती रहती हैं (जब तुम्हें चोट लगती है तो कुछ दिनों में चोट भर जाती है और नई चमड़ी आ जाती है)। ये नई कोशिकाएं चमड़ी के नीचे बनती रहती हैं। बनने के बाद ये ऊपर की कोशिकाओं को बाहर की ओर धकेलती हैं। साथ-ही-साथ ऊपर की कोशिकाएं धीरे-धीरे निष्क्रिय होकर खत्म हो जाती हैं। नई कोशिकाएं उनका स्थान ले लेती हैं।

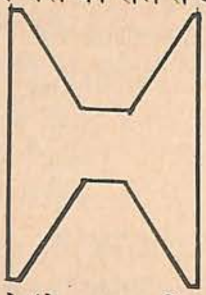
सांप और कुछ अन्य प्राणियों में यह क्रिया एक विशेष ढंग से होती है। तुम जानते ही हो कि सांप, केंचुए आदि का

शेष पृष्ठ 39 पर

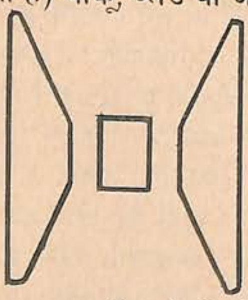


यो यो

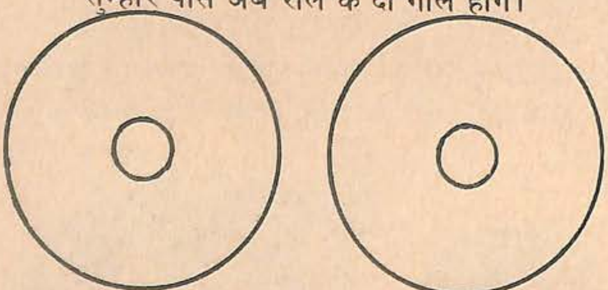
किसी भी दर्जी से तुम धागे की एक खाली रील मांग कर ले सकते हो। यह जरूरी है कि रील लकड़ी की बनी हुई हो। सस्ते धागे की गत्ते की रील से काम नहीं चलेगा।



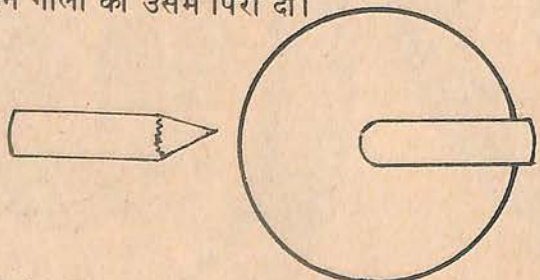
इस रील को बीच से (बेलनाकार हिस्सा, जिस पर धागा लपेटा हुआ होता है) चाकू, ब्लेड या आरी से काट लो।



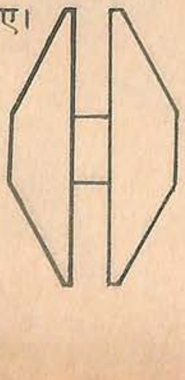
तुम्हारे पास अब रील के दो गोले होंगे।



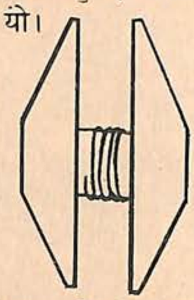
अब एक पेंसिल का छोटा टुकड़ा (2-3 सेंटीमीटर) लो। इन गोलों को उसमें पिरो दो।



गोलों की चपटी सतह अंदर की तरफ, आमने-सामने होनी चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि पेंसिल की मोटाई इतनी होनी चाहिए कि गोले उस पर फिट बैठें। गोले हिलना या घूमना नहीं चाहिए।

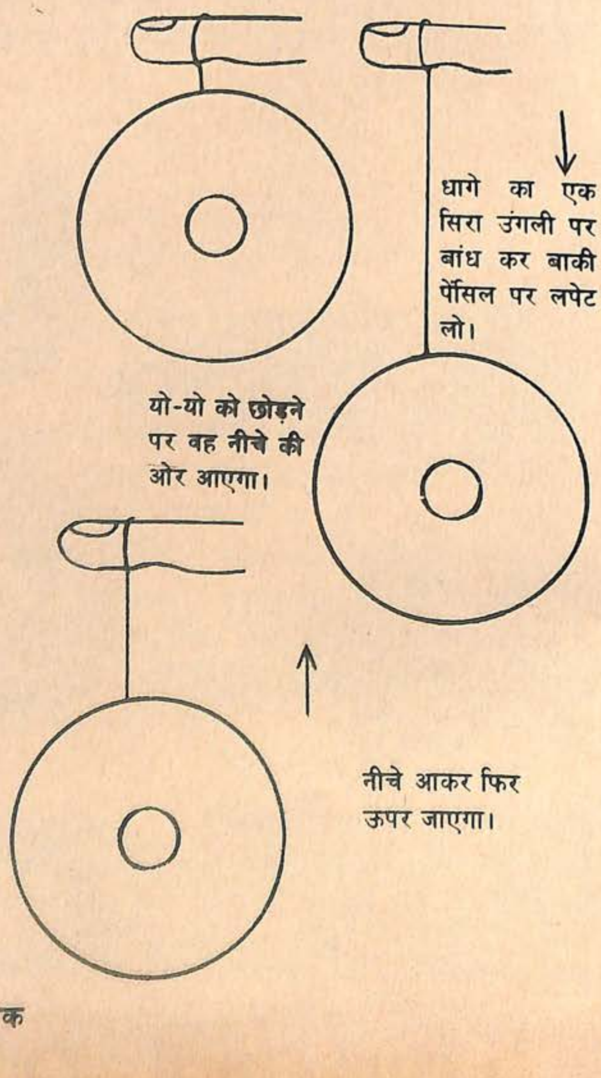


अब कम-से-कम एक मीटर लंबा धागा लो। सस्ता धागा मत लो क्योंकि वह बहुत जल्दी टूटता है। सबसे अच्छा है मोटा धागा या ट्वाइन। इस धागे के एक सिरे को दोनों गोलों के बीच पेंसिल के टुकड़े में बांध लो।
यह है तुम्हारा यो यो।



इसको चलाने के लिए धागे को पेंसिल के टुकड़े पर पूरा लपेट लो। धागे के बाहरी सिरे को हाथ में पकड़ कर एक उंगली पर बांध दो। अब रील को हाथ से छोड़ दो। छोड़ने पर लिपटा हुआ धागा खुल जाता है और रील नीचे चली आती है। जैसे ही पूरा धागा खुल जाता है तो रील फिर से धागे पर चढ़कर ऊपर आ जाती है। थोड़े अभ्यास के बाद तुम अपने यो यो को अपनी मर्जी से ऊपर नीचे कर सकते हो।

यदि रील नहीं मिल पाती है तो दो छोटी पॉलिश की डिब्बियों से काम चलाने की कोशिश करो। या कुछ और उपाय सोच लो।



एक पिता की दुविधा

पिताजी बेटे को पढ़ानें बैठे थे। बेटा भूगोल का पाठ पढ़ रहा था एक प्रश्न था "होशंगाबाद जिले में कितनी तहसीले हैं?" पिताजी ने पढ़ाया छैः तहसीलें हैं, हरदा, सिवनीमालवा, होशंगाबाद, सोहागपुर, पिपरिया और टिमरनी। टिल्लू ने याद कर लिए सब तहसीलों के नाम।

अगले दिन कक्षा में मास्टर जी ने पूछा "बताओ होशंगाबाद में कितनी तहसीलें हैं?

तो टिल्लू ने झट हाथ ऊपर किया और सबसे पहले उत्तर दिया "छः तहसीलें"। फिर उस ने सब तहसीलों के नाम भी गिनाए।

मास्टर साहब सुनकर बोले, "अरे भई किताब में तो केवल चार ही तहसीलें दी है, यह तुम छः कहां से ले आए। बेटा, पुस्तक आंखें खोल कर पढ़ा करो।"

टिल्लू जब घर पहुंचा तो पिताजी से नाराज था। बोला "मैं तुम से अब नहीं पढ़ूंगा। डांट पड़वा दी मुझको। आप मुझको ठीक-ठीक जानकारी नहीं देते। मास्टर साहब तो कहते हैं कि होशंगाबाद में केवल चार तहसीलें हैं।"

टिल्लू ने तो अपना हल ढूंढ लिया। उसे तो मास्टर साहब की परीक्षा पास करनी थी। मगर टिल्लू के पिताजी बड़ी दुविधा में पड़े हुए हैं। टिल्लू की पुस्तक 1977 की छपी हुई है जब होशंगाबाद में सचमुच ही चार तहसीलें हुआ करती थीं। अब वहां छैः तहसीलें हैं। टिल्लू के पिता के सामने कई सवाल खड़े हो गए हैं।

शिक्षा विभाग क्यों पुरानी जानकारी बच्चों को दिए जा रहा है?

अगर पुस्तक पुरानी हो भी गई तो क्या मास्टर साहब को पूरी जानकारी नहीं देना चाहिए?

क्या गलत जानकारी टिल्लू को याद करने दें या सही जानकारी देकर परीक्षा में नंबर कटने की संभावना पैदा करें?

क्या टिल्लू और उसके पिताजी की तुम कुछ मदद कर सकते हो?

सांप (पृष्ठ 37 से)

शरीर खंडों में बंटा रहता है। लेकिन खाल खंडित नहीं, बल्कि अखंडित होती है। इसलिए पूरी खाल एक साथ बदली जाती है, खंडों मे नहीं।

खाल बदलते समय सांप लगभग निष्क्रिय हो जाता है। उसकी आंखों पर (जिन पर पलकें नहीं होतीं) एक पतली अर्धपारदर्शी झिल्ली बन जाती है। इस अवस्था में आने तक नई चमड़ी तैयार हो चुकी होती है। इसका मतलब है, इस समय सांप के शरीर पर दो खालें होती हैं—एक पुरानी और एक नई। सांप के शरीर से इन दोनों खालों के बीच एक द्रव छोड़ा जाता है। यह द्रव इन दोनों खालों को अलग कर देता है। जब ये अलग हो जाती हैं, तब सांप मुंह के नीचे की चमड़ी को काटकर एक छेद बनाता है। इस छेद में से सांप धीरे-धीरे निकलता है, और पुरानी खाल को पीछे छोड़ देता है। निकलते समय खाल उलट जाती है। यानि, बाहरी सतह अंदर चली जाती है और अंदर की सतह बाहर आ जाती है। ठीक वैसे ही जैसे, कभी-कभी तुम जल्दी में कुरता या मोजा उतारने में उन्हें उलट देते हो। यही कारण है कि तुम जब सांप की पुरानी खाल (केंचुली) को पाते हो तो देखते हो कि वह अखंडित है, और उसकी बाहरी सतह अंदर की तरफ है।

पुरानी खाल उतर जाने पर नई खाल उसकी जगह ले लेती है। तब तक यह नरम खाल काफी सख्त भी हो जाती है। ताकि सांप को चलने में दिक्कत न हो और चमड़ी छिल न जाए।

स्केल (पृष्ठ 36 से)

इस तराजू के बांट माचिस की डिब्बी से तैयार कर सकते हो। तुम जानते हो कि डिब्बी में 20 मिलीलीटर पानी आता है। इसका वजन लगभग 20 ग्राम होता है। इस वजन की मदद से तुम किसी ठोस चीज के 20-20 ग्राम के बांट बना सकते हो।

सिक्कों के बांटः आकार के अलावा सिक्कों का वजन भी निश्चित होता है।

1 रुपये के सिक्के का वजन – 8 ग्राम
50 पैसे के सिक्के का वजन – 5 ग्राम
25 पैसे के सिक्के का वजन – 2.5 ग्राम
5 पैसे के सिक्के का वजन – 1.5 ग्राम

करके देखोः 20 ग्राम के बांट की मदद से तुम 10 और 5 ग्राम वजन के बांट बनाओ।

एक सील बंद नई माचिस की डिब्बी का वजन 10 ग्राम होता है।

खाली डिब्बी का वजन 5 ग्राम होता है।
50 बिना जली तीलियों का वजन 5 ग्राम होता है।
10 बिना जली तीलियों का वजन 1 ग्राम होता है।
1 बिना जली तीली का वजन 0.1 ग्राम होता है।

अरविंद गुप्ता

चकमक कथाएं

अर्थ शक्ति



रमजान परदेश से ईद के त्यौहार पर खाली हाथ लौटे तो गांव वालों ने उपेक्षा से रूखी भाषा में कहा, "रमजनुवा आवा है।"

पुनः रमजान परदेश गए और कुछ वर्षों बाद गरमी के मौसम में रुपए कमाकर ढेर-सा सामान लेकर लौटे। साथ में एक बड़ा झावा खरबूजों से भर कर लाए और उसे गांव भर में बंटवाया। खरबूजों की मिठास ने गांव भर को रमजान की आर्थिक शक्ति का बोध करा दिया और लोग आदर से मीठी रसीली भाषा में कहने लगे, "रमजान बच्चा आए हैं। उनके खरबूजा तो बहुतैय अच्छे रहे।"

रजनीकांत वर्मा

स्रोत दर्शन



रघुबर ने साल भर के खर्चे के लिए बचाकर बाकी सारा गेहूं बेच दिया। दूसरे दिन महाजन पैसे थमा गया था—तीन 'कुंटल' गेहूं का तीन सौ पैंतालीस रुपया।

द्वार पर बैठकर रुपया गिनते हुए रघुबर ने सोचा, अगर यही गेहूं चार-पांच महीना बाद बेचता तो पांच-साढ़े-पांच सौ से कम न मिलता। रुपया फड़ में लपेटते-लपेटते उसके सामने सिंचाई, खाद, मालगुजारी, कपड़ा, मिर्च-मसाला जैसी जरूरतें एक-एक करके घूम गईं। इसके फलस्वरूप मिट्टी के मोल गेहूं बेच देने का अहसास कड़वाहट में बदलते-बदलते थम गया था। लेकिन जरूरत भर के लिए पर्याप्त धन न मिलने की चिंता से उसे दब जाना पड़ा था।

महाजन के चले जाने के बाद भी वह द्वार पर बैठा रहा। तन-मन से थका रघुबर सोच रहा था। आखिर इन थोड़े से रुपयों से मैं क्या-क्या करूं? कपड़ा... माल-गुजारी...सिंचाई...खरीफ के लिए खाद... कौन-सी चीज इनमें से छोड़ दूं, कौन-सी पूरी करूं?"

उसके अंदर अजीब-सी लस्त कर देने वाली निराशा घर करती जा रही थी। तभी कहीं से हवा का ठंडा झोंका आया और उसकी पसीने से चिपचिपाई देह को सहलाते हुए निकल गया।

रघुबर ने सिर उठाकर आसमान की ओर देखा। वहां रूई के गोलों-से भरे बादल मंडरा रहे थे। आसमान से निगाह हटाकर उसने सरिया में बंधे दोनों बैलों को देखा। और बेफिक्र-सा ओसारे में घुसकर हुक्का चढ़ाने लगा।

चित्रेश

सबसे बड़ी शिक्षा



जब वह कंधे पर कुदाल लिए हुए घर पहुंचा, तो लगभग बारह बज चुके थे।

वह आकाश की ओर देखते हुए बड़बड़ाया, "यह भी कोई जिंदगी है! आधा दिन लटक गया, लेकिन अभी दातून भी नसीब नहीं हुआ।"

अचानक उसकी नजर पास खड़े राजू पर पड़ गई, "राजू बेटे! आज दिन कौनसा है? आज रविवार तो है नहीं। फिर स्कूल क्यों नहीं गए?" वह गमछे से पसीना पोंछने लगा था।

"बापू, स्कूल जाकर होगा भी क्या?"

"क्यों बेटे?"

"कल मास्टर साहब कह रहे थे कि पढ़कर क्या होगा? जितना पढ़ा काफी है।आखिरकार तुम्हें तो पुस्तैनी काम 'हल-कुदाल' ही संभालना है।"

"हां बेटे, वो झूठ थोड़े ही कहे थे। अब तू समझ ही गया होगा बड़ी शिक्षा कौन है?" लेकिन उसके कांपते हाथ हंसिया सहला रहे थे।

शिव शंकर आर्य

चित्र : चंदन सिंह भट्टी, भोपाल



चित्र : मनोज कुमार शर्मा, पिपरिया

चित्र: प्रखर सागर



डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431



चित्र: चंद्रमोहन

एकलव्य के लिए रेक्स डी. रोजारियो द्वारा प्रकाशित एवं ई.एस.डी. प्रिंटिंग हाऊस प्रा. लि. मंडीदीप, भोपाल द्वारा मुद्रित